संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

शहर समता

वर्ष-22 अंक- 277
पृष्ठ 8
शनिवार
27 जून 2026
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- सफेद बालों को नेचुरली काला...

विचार- कारोबार और सत्ता के रिश्ते पर...

खेल- जर्मनी को हराकर इतिहास रच...

सीएम योगी बोले-

डबल इंजन की सरकार न होती, तो ये नौजवान नौकरी से वंचित रह जाते

देवरिया,एजेंसी। उन्होंने दिल्ली के पूर्व सीएम केजरीवाल के अयोध्या दौरे पर भी तंज कसा। कहा– दिल्ली से भी एक सज्जन आए हैं। उनको बता दूं कि दिल्ली को 15 साल में कुछ नहीं दिया। दिल्ली को बर्बाद कर दिया। अयोध्या देखकर जाओ और जाकर पश्चाताप करो। अगर ऐसा दिल्ली में किया होता, तो दिल्ली भी चमक रही होती। इससे पहले, योगी ने 456.38 करोड़ की 106 विकास परियोजनाओं का शिलान्यास–लोकार्पण भी किया। योगी ने कहा– जो लोग राम के बारे में सवाल उठा रहे हैं, ये वही लोग हैं, जिन्होंने राम को नकारा था। एक पक्ष था, जो कहता था कि राम हैं ही नहीं। वे लगातार विरोध करते रहे। वकीलों की फौज लेकर सुप्रीम कोर्ट तक लड़ते रहे। एक पक्ष वह है, जो राम भक्तों पर गोलियां चलवाता था। अब वही कह रहे हैं कि आस्था के साथ खिलवाड़ हो रहा है। योगी ने कहा– सपा सरकार को कौन नहीं जानता? सपा सरकार में पूरा खानदान नौकरियों में वसूली करने निकल पड़ता था। आज देवरिया के लोगों को पुलिस भर्ती में नौकरी मिल रही है। डबल इंजन की सरकार न होती, तो ये नौजवान नौकरी से वंचित रह जाते। चाचा–भतीजे की जोड़ी होती, तो नौकरियों को नीलाम कर दिया जाता। योगी ने कहा– पूर्वांचल एक्सप्रेसवे का टेंडर सपा सरकार ने 2016 में किया था। 110 मीटर चौड़ाई और 340 किमी लंबाई रखी थी। इन्होंने 15 हजार 8 सौ करोड़ रुपए का प्रस्ताव बनाया था। जब हमारी सरकार आई तो मैंने पूछा कि क्या प्रगति है, तो पता चला कि जमीन ही नहीं मिली है। हमने कहा कि जमीन नहीं तो टेंडर कैसे हो गया। मैंने कहा कि जमीन का अधिग्रहण करिए। हमने चौड़ाई बढ़ाकर 120 मीटर की। लगा कि कभी चौड़ाई बढ़ानी पड़ी या यहां हाईस्पीड ट्रेन चलानी पड़ेगी तो आसानी होगी। उन्होंने कहा– 15 हजार 800 करोड़ का टेंडर देखकर मैंने 2018 में दोबारा इसका टेंडर कराया। दोबारा भी 15 हजार 800 करोड़ रुपए की ही बोली आई। फिर उसे भी रद्द किया। तीसरी बार टेंडर कराया। शर्तों को सरल किया। टेक्निकल और फाइनेंशियल बिड एक साथ मंगवाई। तब इसे 11,200 करोड़ रुपए में बनवाया। लगभग 3 हजार करोड़ रुपए की डकैती पड़ रही थी। इसे हमने रोका। डकैती रुकी तो सपा को बुरा लग रहा है। अब सपा को कुछ नहीं मिला अयोध्या धाम को बदनाम किया जा रहा है।

योगी ने कहा– याद करिए, मैंने जीरो टॉलरेंस के साथ सरकार चलाने की बात कही थी। इस प्रदेश को कांग्रेस और सपा ने माफिया–त्रस्त बना दिया था। यहीं थाने लूट लिए जाते थे। आज मोहर्रम है, लेकिन किसी गुंडे का पता नहीं है। कोई उपद्रव नहीं कर सकता। अगर कोई करेगा, तो सात पीढ़ियों तक भुगतेगा। योगी ने कहा– ये सपा, बसपा और कांग्रेस के लोग जनता को बिजली नहीं देते थे, क्योंकि अंधेरे में ये अपना खेल खेलते थे। डकैती डालते थे। मैंने यहां दो बच्चों का अन्नप्राशन कराया। वे बच्चे हंस रहे थे। उन्हें पता है कि डबल इंजन की सरकार अच्छा काम कर रही है। ये बच्चे इंसेफेलाइटिस से मुक्त हैं। अब बेटियां नंगे पैर स्कूल नहीं जातीं। उनके पैरों में जूते–चप्पल होते हैं।

लखनऊ अग्निकांड के बाद उठी मांग:

पूरे देश के लिए एक सेफ्टी नियम बनाए सरकार

नई दिल्ली,एजेंसी। पिछले दिनों लखनऊ के अलीगंज में स्थित एक कोचिंग संस्थान में आग लगने से 15 बच्चों की मौत के बाद एक बार फिर से सावर्जनिक स्थानों पर फायर सेफ्टी से जुड़े नियमों को लेकर सवाल उठने लगा है। इसी बीच देश में स्कूल, अस्पताल, कोचिंग सेंटर, होटल और दूसरी सार्वजनिक इमारतों में बार–बार लगने वाली आग की घटनाओं को लेकर सुप्रीम कोर्ट में एक जनहित याचिका दायर की गई है। इसमें मांग की गई है कि पूरे देश में ज्यादा जोखिम वाली सार्वजनिक जगहों के लिए एक जैसा श्राष्ट्रीय न्यूनतम फायर और जीवन–सुरक्षा फ्रेमवर्कश बनाया जाए और उसे सख्ती से लागू किया जाए। यह याचिका वकील नरेंद्र कुमार गोस्वामी ने दायर की है। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट से केंद्र और राज्य सरकारों को निर्देश देने की मांग की है कि सभी सार्वजनिक इमारतों के लिए न्यूनतम फायर और जीवन–सुरक्षा मानक तय किए जाएं। उनका कहना है कि अलग–अलग राज्यों में अलग–अलग नियम होने की वजह से सुरक्षा के स्तर में काफी अंतर है और नियमों का सही तरीके से पालन भी नहीं हो पाता। याचिका में कहा गया है कि मौजूदा फायर सेफ्टी कानून राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में अलग–अलग हैं। कई जगह नियम अधूरे हैं, जबकि कई जगह उनका सही तरीके से पालन नहीं किया जाता। इसका सीधा असर लोगों की सुरक्षा पर पड़ता है और आग लगने जैसी घटनाओं में जान–माल का नुकसान बढ़ जाता है। याचिका में मांग की गई है कि एक ऐसा राष्ट्रीय फ्रेमवर्क बनाया जाए, जो पूरे देश में समान रूप से लागू हो। इसके दायरे में स्कूल, अस्पताल, कोचिंग सेंटर, होटल, गेस्ट हाउस, मनोरंजन स्थल, कमर्शियल बिल्डिंग और ऐसी सभी जगहों को शामिल किया जाए, जहां बड़ी संख्या में लोग आते–जाते हैं।

इसके अलावा, याचिका में फायर सेफ्टी नियमों का सख्ती से पालन कराने, नियमित निरीक्षण कराने, आपातकालीन स्थिति से निपटने की तैयारी सुनिश्चित करने, लोगों को सुरक्षित बाहर निकालने की स्पष्ट व्यवस्था बनाने और नियमों के उल्लंघन पर संबंधित अधिकारियों व भवन मालिकों की जवाबदेही तय करने की भी मांग की गई है। याचिका में कहा गया है कि देश में बार–बार होने वाली आग की घटनाएं यह दिखाती हैं कि फायर सेफ्टी व्यवस्था में गंभीर खामियां हैं। आग से बचाव के नियम होने के बावजूद उनका सही तरीके से पालन नहीं हो रहा, जिससे लोगों की जान लगातार खतरे में बनी रहती है।

केंद्र सरकार पर संजय राउत का हमला, कहा-

राम मंदिर के चढ़ावे के पैसे से खरीदे जा रहे सांसद

मुंबई,एजेंसी। राम मंदिर चढ़ावा विवाद के मामले पर सियासत तेज हो गई है।

शिवसेना (यूबीटी) से राज्यसभा सदस्य संजय राउत ने भी बड़ा सवाल खड़ा किया है। शुक्रवार को प्रेसवार्ता कर कहा कि राम मंदिर चढ़ावा के मुख्य आरोपी अभी भी फरार हैं। इसका इस्तेमाल सांसदों को खरीदने में किया जा रहा है। शिवसेना (यूबीटी) से राज्यसभा सदस्य संजय राउत ने शुक्रवार को अयोध्या राम मंदिर चंदे में कथित हेराफेरी के मामले में 8 लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज होने पर कहा, मुख्य आरोपी अभी भी ट्रस्ट में काम कर रहे हैं। जो लोग खुद को हिंदुत्ववादी मानते हैं, वे मंदिर से करोड़ों रुपये चुराते हैं और यह पैसा राजनीति में आता है, जहां इसका इस्तेमाल सांसदों को खरीदने और राजनीतिक दलों को तोड़ने के लिए किया जाता है। आपने राम मंदिर से चुराए गए 2000 करोड़ रुपये का इस्तेमाल टीएमसी और शिवसेना (यूबीटी) के सांसदों को तोड़ने के लिए किया। शिवसेना (यूबीटी) राज्यसभा सदस्य संजय राउत ने ऑपरेशन टाइगर के तहत शिवसेना (यूबीटी) के छह सांसद एकनाथ शिंदे की शिवसेना में शामिल होने पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन टाइगर के तहत कुछ नहीं हुआ है। आप टाइगर को बदनाम मत करो। एक तो मान लिया ना? हम सब लोग आज भी टाइगर हैं। अगर हम टाइगर हैं, तो जो आपके साथ चले गए वह कौन हैं? लोमड़ी है। आप लोग लोमड़ी हैं, हम टाइगर हैं। आप टाइगर के आस–पास नहीं जा सकते हो, इसीलिए लोगों को वाई प्लस की सुरक्षा दी गई है।

अमित शाह बोले-

देश के युवाओं को मादक पदार्थों के खतरे से बचाने के लिए सरकार के अटूट संकल्प पर जोर दिया

नई दिल्ली,एजेंसी। आज अंतरराष्ट्रीय नशामुक्ति दिवस है। इसके अवसर पर उपराष्ट्रपति और केंद्रीय मंत्री अमित शाह ने मुक्त भारत का संदेश दिया है। उपराष्ट्रपति ने कहा कि नशीली दवाओं के दुरुपयोग और अवैध तस्करी के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय दिवस पर, आइए हम नशा मुक्त भारत बनाने के अपने सामूहिक संकल्प को दोहराएं। वहीं, केंद्रीय मंत्री ने कहा कि सरकार एक सुरक्षित समाज के निर्माण और प्रभावित व्यक्तियों को उचित देखभाल प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, श्मैं उन विश्वविद्यालयों, शिक्षण संस्थानों और संगठनों की सराहना करता हूं जो इस अभियान को सक्रिय रूप से आगे बढ़ा रहे हैं। उनके प्रयास एक मजबूत, स्वस्थ और नशा–मुक्त भारत बनाने की दिशा में सार्थक योगदान दे रहे हैं। आइए, हम सब मिलकर जागरूकता फैलाएं, नशा छोड़ने की प्रक्रिया से गुजर रहे लोगों का समर्थन करें और अपने युवाओं को नशे के बजाय उम्मीद, सेहत और जीवन के मकसद को चुनने के लिए प्रेरित करें।

केंद्रीय मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को अंतरराष्ट्रीय नशामुक्ति दिवस के अवसर पर देश के युवाओं को मादक पदार्थों के खतरे से बचाने के लिए सरकार के अटूट संकल्प पर जोर दिया। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि सरकार एक सुरक्षित समाज के निर्माण और प्रभावित व्यक्तियों को उचित देखभाल प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। केंद्रीय मंत्री अमित शाह ने एक्स पोस्ट में इस बात पर जोर दिया कि मौजूदा प्रशासन नशे की लत से प्रभावित लोगों की देखभाल करते हुए तस्करी नेटवर्क को खत्म करने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। उन्होंने लिखा, श्नशीली दवाओं के खिलाफ हमारी राष्ट्रीय लड़ाई में शामिल सभी योद्धाओं को अंतरराष्ट्रीय नशीली दवाओं के खिलाफ दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। मोदी जी के नेतृत्व में भारत ने नशीले पदार्थों के गिरोहों का निर्मम उन्मूलन करके और प्रभावित व्यक्तियों को उचित देखभाल और सहानुभूति प्रदान करके नशीली दवाओं के दुरुपयोग की वैश्विक चुनौती के खिलाफ सबसे मजबूत लड़ाई लड़ी है।श पोस्ट में लिखा था कि यह दिन हमारी युवा पीढ़ी को नशे से बचाने के हमारे संकल्प को और मजबूत करे। नशामुक्तभारत। वहीं,तमिलनाडु के मुख्यमंत्री सी. जोसेफ विजय ने शुक्रवार को चेन्नई के मरीना बीच पर स्टार्ट रन, स्टॉप ड्रग्स एंटी–ड्रग अवेयरनेस रन को हरी झंडी दिखाई। यह कार्यक्रम नशीली दवाओं के दुरुपयोग और अवैध तस्करी के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय दिवस के मौके पर आयोजित किया गया था और मुख्यमंत्री खुद भी इसमें शामिल हुए। ट्रैकसूट, स्नीकर्स और धूप के चश्मे पहने विजय ने स्टार्ट रन, स्टॉप ड्रग्स टी–शर्ट पहने प्रतिभागियों के साथ दौड़ते हुए जोरदार तालियां बटोरीं। तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी और राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने लोगों से नशे से दूर रहने और नशामुक्त समाज के निर्माण में सहयोग देने की अपील की।

पासपोर्ट नागरिकता का सबूत क्यों नहीं ? थरूर ने उठाए सवाल, कहा-

कानून में तुरंत बदलाव किया जाए

नई दिल्ली,एजेंसी। पासपोर्ट नागरिकता का अंतिम प्रमाण नहीं होने को लेकर देश में छिड़ी बहस के बीच कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने केंद्र सरकार से बड़ा बदलाव करने

की मांग की है। थरूर ने कहा है कि सरकार को कानूनी ढांचे में संशोधन कर पासपोर्ट और आधार कार्ड दोनों को भारतीय नागरिकता का वैध और निर्णायक प्रमाण घोषित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि जब तक सरकार इन दस्तावेजों को रद्द या वापस नहीं लेती, तब तक इन्हें नागरिकता का अंतिम सबूत माना जाना चाहिए। थरूर का यह बयान विदेश मंत्रालय की उस टिप्पणी के बाद आया है, जिसमें कहा गया था कि पासपोर्ट मुख्य रूप से यात्रा दस्तावेज है, नागरिकता का अंतिम प्रमाण नहीं। यह विवाद तब शुरू हुआ जब विदेश मंत्रालय के अधिकारियों ने कहा कि पासपोर्ट नागरिकता स्थापित करने वाला दस्तावेज नहीं है, बल्कि यह एक यात्रा दस्तावेज है। इसके बाद राजनीतिक बयानबाजी तेज हो गई। केंद्र सरकार ने स्पष्ट किया कि यह कोई नया फैसला नहीं है और पिछले 12 वर्षों में इस संबंध में कोई बदलाव नहीं किया गया है। सरकार का कहना है कि पासपोर्ट अधिनियम 1967 की धारा 20 के तहत विशेष परिस्थितियों और सार्वजनिक हित में गैर–नागरिकों को भी पासपोर्ट जारी किया जा सकता है। वहीं विपक्ष ने आरोप लगाया कि इस तरह की व्याख्या भविष्य में नागरिकता अधिकारों को लेकर विवाद पैदा कर सकती है। शशि थरूर ने कहा कि दशकों से भारतीय पासपोर्ट को पहचान का सबसे भरोसेमंद दस्तावेज माना जाता रहा है। पासपोर्ट बनवाने के लिए पुलिस सत्यापन और कई तरह के दस्तावेजों की जांच की जाती है। ऐसे में यह कहना कि पासपोर्ट नागरिकता का प्रमाण नहीं है, आम लोगों के लिए भ्रम पैदा करता है। थरूर ने सवाल उठाया कि अगर पासपोर्ट नागरिकता साबित नहीं करता, तो फिर कौन–सा दस्तावेज करता है।

अयोध्या राम मंदिर चंदा चोरी विवाद: चंपत राय और अनिल मिश्रा का ट्रस्ट से इस्तीफा

अयोध्या,संवाददाता। राम मंदिर चंदा विवाद के बीच बड़ी खबर सामने आ रही है। राम जन्मभूमि ट्रस्ट के दो सदस्यों ने इस्तीफा दे दिया है। राम मंदिर जन्मभूमि ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय के इस्तीफे की खबर सामने आ रही है। इसके अलावा अनिल मिश्रा ने भी अपना इस्तीफा दे दिया है। यह इस्तीफा ऐसे समय में हुआ है जब चंदा चोरी मामले को लेकर एफआईआर दर्ज किया गया है और आठ लोगों की गिरफ्तारी हुई है। अयोध्या स्थित राम मंदिर में कथित वित्तीय अनियमितताओं से जुड़े मामले में श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की ओर से आठ लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज किए जाने के बाद सभी नामजद आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है।

बिना सहमति निजी फोटो-वीडियो शेयर करने पर होगी जेल, सरकार ने लागू किए नए नियम

बंगलूरू,एजेंसी। कर्नाटक सरकार ने एक बड़ा और ऐतिहासिक फैसला लिया है। अब राज्य में किसी भी व्यक्ति की निजी या अंतरंग तस्वीरें और वीडियो उसकी मर्जी के बिना साझा करने पर पुलिस को बिना किसी देरी के एफआईआर दर्ज करनी होगी। गृह मंत्री प्रियांक खरगे ने इस संबंध में पुलिस को कड़े निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा है कि ब्लैकमेल, सेक्सटॉर्शन जैसे साइबर अपराधों के खिलाफ पुलिस को अब और भी ज्यादा सख्त होना होगा। गृह मंत्री ने स्पष्ट किया कि निजता का अधिकार संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत एक मौलिक अधिकार है। सुप्रीम कोर्ट ने भी अपने अहम फैसले में इसकी पुष्टि की है। उन्होंने चेतावनी दी कि अगर कोई पुलिस अधिकारी पुराने नियमों का बहाना बनाकर एफआईआर दर्ज करने में देरी करता है या मना करता है, तो उसे गंभीर अनुशासनात्मक कार्रवाई का सामना करना पड़ेगा। राज्य के सभी पुलिस कमिश्नरों और जिला पुलिस अधीक्षकों को इन निर्देशों का सख्ती से पालन सुनिश्चित करने को कहा गया है। राज्य के पुलिस महानिदेशक एमए सलीम ने इस आदेश को लागू करने के लिए नए दिशा–निर्देश जारी किए हैं। इन नियमों में साफ तौर पर कहा गया है कि फोटो या वीडियो खींचने की अनुमति देने का मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि उसे कहीं भी पोस्ट या साझा किया जा सकता है। अगर किसी पीड़ित ने शुरुआत में रिकॉर्डिंग के लिए सहमति दी थी, लेकिन बाद में उसकी मर्जी के बिना उसे फैलाया गया, तो यह एक संज्ञेय अपराध माना जाएगा। यह कानून पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए समान है। कानूनी प्रावधानों के तहत, भारतीय न्याय संहिता 2023 की धारा 77 के अनुसार किसी महिला की निजी तस्वीरों को बिना मर्जी साझा करना दंडनीय है। पहली बार ऐसा करने पर एक से तीन साल और दोबारा अपराध करने पर तीन से सात साल की जेल हो सकती है। साथ ही जुर्माना भी देना होगा। सूचना प्रौद्योगिकी एक्ट की धारा 66(E) के तहत किसी के निजी अंगों की तस्वीर बिना मर्जी लेने या भेजने पर तीन साल की जेल या दो लाख रुपये तक का जुर्माना हो सकता है। अश्लील सामग्री ऑनलाइन भेजने पर 10 लाख रुपये तक का जुर्माना और सात साल तक की जेल हो सकती है। नए नियमों के अनुसार, पुलिस को शिकायत मिलते ही तुरंत एफआईआर दर्ज करनी होगी। अगर मामला उस थाने के क्षेत्र में नहीं आता, तो भी जीरो एफआईआर दर्ज करना अनिवार्य है। इसके बाद केस को संबंधित थाने में भेजा जाएगा। पुलिस को सोशल मीडिया कंपनियों को तुरंत नोटिस भेजकर आपत्तिजनक सामग्री हटवाने या ब्लॉक करवाने का निर्देश भी दिया गया है।

मोहर्रम के जुलूस में शामिल डीजे की टक्कर से मंदिर का चबूतरा क्षतिग्रस्त, तनाव के चलते पीएसी तैनात

करनाईपुर (प्रयागराज)। बहरिया थाना क्षेत्र के नेवादा गांव में देर रात मोहर्रम जुलूस के दौरान डीजे की टक्कर से मंदिर का चबूतरा टूट गया। दीवार भी क्षतिग्रस्त हो गई। जिससे ग्रामीणों में आक्रोश फैल गया। बहरिया थाना क्षेत्र के नेवादा गांव में देर रात मोहर्रम जुलूस के दौरान डीजे की टक्कर से मंदिर का

चबूतरा टूट गया। दीवार भी क्षतिग्रस्त हो गई। जिससे ग्रामीणों में आक्रोश फैल गया। सूचना मिलते ही बहरिया पुलिस मौके पर पहुंची और डीजे को कब्जे में लेकर सीज कर दिया। शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए पीएसी बल की तैनाती कर दी गई है। पुलिस की निगरानी में रातों रात क्षतिग्रस्त चबूतरे की टाइल्स एवं चबूतरे की मरम्मत कराई गई। पुलिस ने मामले में कार्रवाई करते हुए आधा दर्जन लोगों को गिरफ्तार कर लिया है और उनसे पूछताछ की जा रही है। गांव में स्थिति सामान्य बनी हुई है तथा एहतियात के तौर पर पुलिस एवं पीएसी बल तैनात कर दिया गया है।

विवाहिता की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत, कमरे से अंदर फंद से लटकता मिला शव

प्रयागराज। औद्योगिक थाना क्षेत्र की रामपुर चौकी अंतर्गत मुंगारी गांव के बड़ी हल्दी मोहल्ले में बृहस्पतिवार आधी रात एक विवाहिता का शव कमरे के अंदर फंदे से लटकता मिला। औद्योगिक थाना क्षेत्र की रामपुर चौकी अंतर्गत मुंगारी गांव के बड़ी हल्दी मोहल्ले में बृहस्पतिवार आधी रात एक विवाहिता का शव कमरे के अंदर फंदे से लटकता मिला। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मृतका के मायके वालों को सूचना दे दी गई है। पुलिस का कहना है कि उनके आने के बाद मिलने वाली तहरीर के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। मुंगारी हल्दी गांव निवासी मुस्कान (24) पत्नी मोहम्मद अमन का शव बृहस्पतिवार देर रात कमरे के अंदर फंदे के सहारे लटकता पाया गया। शुक्रवार सुबह घटना की जानकारी होने पर स्वजनों और रिश्तेदारों में कोहराम मच गया। सूचना पर औद्योगिक थाना पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। थाना प्रभारी कमलेश पटेल ने बताया कि मृतका का मायका मध्य प्रदेश के जबलपुर जिले के बेलबाग थाना क्षेत्र में है। सूचना मिलने पर उसके पिता सगीर अहमद समेत अन्य परिजन प्रयागराज के लिए रवाना हो गए हैं। पुलिस ने रिश्तेदारों की सूचना पर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। बताया गया कि मुस्कान की शादी तीन वर्ष पहले हुई थी। उसके दो छोटे बच्चे हैं, जिनमें दो वर्षीय बेटी अमिमा और नौ माह का बेटा अमजद शामिल हैं। पुलिस का कहना है कि मायके पक्ष के आने और उनकी तहरीर मिलने के बाद मामले में आगे की विधिक कार्रवाई की जाएगी।

संभल में ताजिया जुलूस को नए रूट से निकालने की नहीं मिली अनुमति

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने संभल के हजरतनगर गढ़ी क्षेत्र में मुहर्रम के दौरान ताजिया और अलम जुलूस को सिरसी–बिलारी मुख्य मार्ग से निकालने की अनुमति नहीं दी। कोर्ट ने कहा कि किसी धार्मिक जुलूस को किसी विशेष मार्ग से निकालना मौलिक अधिकार का हिस्सा नहीं है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने संभल के हजरतनगर गढ़ी क्षेत्र में मुहर्रम के दौरान ताजिया और अलम जुलूस को सिरसी–बिलारी मुख्य मार्ग से निकालने की अनुमति नहीं दी। कोर्ट ने कहा कि किसी धार्मिक जुलूस को किसी विशेष मार्ग से निकालना मौलिक अधिकार का हिस्सा नहीं है। ऐसे मामलों में कानून–व्यवस्था और सार्वजनिक शांति को प्राथमिकता दी जाएगी। यह आदेश न्यायमूर्ति जेजे मुनीर, न्यायमूर्ति अरुण कुमार की खंडपीठ ने शरीफ अहमद और अन्य की जनहित याचिका पर दिया है। याचियों का तर्क था कि 1952 से 2022 तक ताजिया जुलूस एक पारंपरिक मार्ग से निकलता था। 2022 में रेलवे लाइन के विद्युतीकरण के बाद हादसे और रेलवे की ओर से रास्ता बंद किए जाने के कारण पुराना मार्ग उपयोग में नहीं रहा। इसके चलते प्रशासन से नए मार्ग की अनुमति मांगी गई थी।

प्रशासन ने अदालत को बताया कि 2023 में समुदाय और प्रशासन के बीच एक समझौता हुआ था। इसके तहत जुलूस एक निर्धारित मार्ग से सरकारी ट्यूबवेल तक जाएगा। वहीं, धार्मिक रस्में पूरी की जाएंगी। उसके बाद अलम को अलग कर वापस ले जाया जाएगा। प्रशासन ने यह भी कहा कि प्रस्तावित नया मार्ग सिरसी–बिलारी मुख्य मार्ग से होकर जाता है। इसका अन्य समुदायों की ओर से विरोध किया गया है। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि धर्म का पालन करने का अधिकार और उसे किसी विशेष तरीके या विशेष मार्ग पर करने का दावा अलग–अलग बातें हैं। यदि प्रशासन ने शांति व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए किसी नए मार्ग की अनुमति नहीं दी है तो उसे अवैध नहीं कहा जा सकता।

1.75 लाख नगीनों से जड़े मुकुट धारण करेंगे भगवान, पुरी से आया 17 फीट ऊंचा ध्वज

प्रयागराज। संगम नगरी में 16 जुलाई को विभिन्न मंदिरों और समितियों की ओर से जगन्नाथ रथयात्रा निकाली जाएगी। जगन्नाथ रथ यात्रा समिति (बड़ा रथ) की ओर से भगवान जगन्नाथ, सुभद्रा और बलभद्र को 1.75 लाख नगीनों से जड़ित मुकुट धारण कराया जाएगा। संगम नगरी में 16 जुलाई को विभिन्न मंदिरों और समितियों की ओर से जगन्नाथ रथयात्रा निकाली जाएगी। जगन्नाथ रथ यात्रा समिति (बड़ा रथ) की ओर से भगवान जगन्नाथ, सुभद्रा और बलभद्र को 1.75 लाख नगीनों से जड़ित मुकुट धारण कराया जाएगा। मीडिया प्रभारी राजीव गुप्त बिट्टू ने बताया कि 29 जून को 108 घड़ों के जल से भगवान का स्नान कराया जाएगा।

श्री जगन्नाथ जी महोत्सव समिति ट्रस्ट की रथयात्रा में पुरी धाम से आया 17 फीट ऊंचा ध्वज, चांदी निर्मित हनुमानजी की प्रतिमा, महापुरुषों पर आधारित झांकियां और पांच पांडवों की विशेष झांकी आकर्षण का केंद्र रहेंगी। मथुरा से आए विशेष वस्त्रों से भगवान का शृंगार होगा। 22 फीट ऊंचे और 16 पहियों वाले नंदी घोष रथ पर भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा विराजमान होंगे। रथ यात्रा संयोजक राजेश केसरवानी के अनुसार, 29 जून को स्नान–विश्राम यात्रा, 17 जुलाई को भजन गायक सुधीर व्यास का भजन संध्या कार्यक्रम और 19 जुलाई को महाप्रसाद वितरण व तिरुपति बालाजी का शृंगार दर्शन होगा।

भाजपा ने नए चेहरों को बढ़ाकर बिछाई भविष्य की बिसात, नई कार्यकारिणी में प्रयागराज की हिस्सेदारी बढ़ी

प्रयागराज। लंबे इंतजार के बाद भारतीय जनता पार्टी ने प्रदेश कार्यकारिणी घोषित की तो इसमें बड़ी हिस्सेदारी प्रयागराज के खाते में आई। पार्टी ने जिस तरह प्रयागराज के तीन युवा चेहरों को प्रदेश कार्यकारिणी में बड़े पदों से नवाजा है, उसमें भाजपा की भविष्य के लिए बिछाई गई सधी हुई बिसात साफ नजर आती है। लंबे इंतजार के बाद भारतीय जनता पार्टी ने प्रदेश कार्यकारिणी घोषित की तो इसमें बड़ी हिस्सेदारी प्रयागराज के खाते में आई। पार्टी ने जिस तरह प्रयागराज के तीन युवा चेहरों को प्रदेश कार्यकारिणी में बड़े पदों से नवाजा है, उसमें भाजपा की भविष्य के लिए बिछाई गई सधी हुई बिसात साफ नजर आती है। भाजपा ने इस इलाके की दो संघर्षशील महिलाओं को प्रदेश उपाध्यक्ष बनाकर उस कमी को पूरा कर दिया जिसका पार्टी की अंदरूनी बैठकों में अक्सर जिक्र होता रहा है।

साथ ही, एक जुझारू युवा को भाजपा युवा मोर्चा की कमान देकर बड़ा जातीय समीकरण भी साध लिया है। पिछले काफी दिनों से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और उससे जुड़े संगठनों के वरिष्ठ पदाधिकारी प्रयागराज जिले और इसके पास की विधानसभा सीटों के समीकरण

को समझने के लिए कई तरह से फीडबैक ले रहे थे। भाजपा भी लखनऊ की गद्दी तक पहुंचने की सीढ़ी माने जाने वाले संगम क्षेत्र को लेकर हर तरह की रणनीति बना रही थी। फीडबैक में बार–बार यह बात सामने आ रही थी कि प्रयागराज और इससे सटे जिलों में पार्टी की सियासत ऐसे नेताओं के इर्दगिर्द घूम रही है, जो पिछले विधानसभा और उसके बाद लोकसभा चुनाव में पार्टी को झटके से नहीं बचा सके थे। प्रयागराज में भाजपा की अंदरूनी गणित को समझने वाले एक पूर्व पत्रकार और राजनीतिक विश्लेषक ने तो पार्टी के इस कदम को ओवरहॉलिंग की संज्ञा दी है। उनका कहना है कि पूजा पाल और डॉ. कृतिका अग्रवाल को प्रदेश उपाध्यक्ष बनाकर इस इलाके में पार्टी ने विपक्ष की उभरती महिला नेताओं की काट तलाश ली है।

समाजवादी पार्टी से भाजपा में आईं विधायक पूजा पाल जहां संघर्ष की प्रतीक और पाल बिरादरी में अच्छी पकड़ वाली नेता मानी जाती हैं, वहीं डॉ. कृतिका अग्रवाल संघ और भाजपा की पृष्ठभूमि में धीरे–धीरे आगे बढ़ीं सक्रिय कार्यकर्ता की छवि रखती हैं। महिला मोर्चा के कार्यक्रम हों अथवा संघ से जुड़े आयोजन, उनकी सक्रिय भागीदारी दिखती रही है। इनको प्रदेश की सियासत में बड़ा पद देकर पार्टी ने जमे–जमाए नेताओं के बीच नई पौध खड़ी कर दी है।

रोहित मिश्रा को भाजपा युवा मोर्चा का प्रदेश अध्यक्ष बनाकर पार्टी कैडर में संदेश देने की कोशिश की गई है कि कार्यकर्ताओं को साथ लेकर सड़क पर उतरने की क्षमता रखने वाले जुझारू युवा पार्टी की जरूरत हैं। इसके साथ ही प्रयागराज की सियासत में एक गैप को भरकर पार्टी ने जातीय गुटीय समीकरण भी साधा है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्रसंघ अध्यक्ष के रूप में रोहित ने जो संघर्षशील छवि बनाई थी, उसका पुरस्कार पार्टी ने प्रदेश युवा मोर्चा का अध्यक्ष बनाकर दिया है।

जुझारू छात्र नेताओं में शामिल रहे रोहित के लिए युवाओं को साधना बड़ी चुनौती

प्रयागराज। रोहित मिश्रा यानी वह नाम, जिनके नेतृत्व में हुए प्रभावी छात्र आंदोलन की वजह से इलाहाबाद विश्वविद्यालय (इविवि) के कुलपति को इस्तीफा देकर जाना पड़ा। रोहित मिश्रा यानी वह नाम, जिनके नेतृत्व में हुए प्रभावी छात्र आंदोलन की वजह से इलाहाबाद विश्वविद्यालय (इविवि) के कुलपति को इस्तीफा देकर जाना पड़ा। युवाओं के बीच अपनी मजबूत पकड़ बनाने वाले रोहित मिश्रा अब प्रदेश भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) युवा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष बनकर नई जिम्मेदारी संभालने जा रहे हैं।

भाजपा युवा मोर्चा का प्रदेश अध्यक्ष बनाए जाने के बाद रोहित के लिए पहली चुनौती रोजगार और परीक्षाओं के मुद्दे पर युवाओं को साधना है क्योंकि इस मुद्दे पर लगातार आंदोलन हो रहे हैं। हालांकि, रोहित की गिनती हमेशा जुझारू छात्र नेताओं में होती रही है। 2016–17 में रोहित जब इलाहाबाद विश्वविद्यालय छात्रसंघ के अध्यक्ष बने तो सबसे पहले विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति प्रो. रतन लाल हांगलू के खिलाफ ही मोर्चा खोल दिया था।

कुलपति के खिलाफ वित्तीय अनियमितता का आरोप लगाते हुए रोहित मिश्रा के नेतृत्व में उग्र आंदोलन हुआ था और रोहित का जेल जाना पड़ा था। हालांकि, आंदोलन का प्रभाव रहा कि तत्कालीन कुलपति को अपनी कुर्सी छोड़नी पड़ी। विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच रोहित की मजबूत पकड़ को देखते हुए उन्हें अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) में केंद्रीय विश्वविद्यालयों का संयोजक और फिर राष्ट्रीय मंत्री भी बनाया गया।

रोहित वर्तमान में मध्य प्रदेश में 'वन नेशन, वन इलेक्शन' के प्रभारी हैं। मूल रूप से प्रतापगढ़ के हर्षपुर कोटवा लालगंज के रहने वाले रोहित ने स्नातक, परास्नातक और शोध इलाहाबाद विश्वविद्यालय से ही किया। उन्होंने अमर उजाला से बातचीत में कहा कि आज से प्रदेश का हर युवा खुद को भाजपा युवा मोर्चा का अध्यक्ष समझे। उनकी प्राथमिकता युवाओं की एक ऐसी मजबूत टीम तैयार करना है जो प्रदेश के युवाओं को जमीनी हकीकत से अवगत करा सके और अधिक से अधिक युवाओं को स्वरोजगार से जोड़ सके।

सियासत की परीक्षा में फिर पास हुईं पूजा पाल, भाजपा ने दिया इनाम

प्रयागराज। पति विधायक राजू पाल की हत्या के बाद अतीक अहमद जैसे माफिया के खिलाफ न्याय की लड़ाई लड़ने वाली पूजा पाल की राजनीतिक हैसियत पर भाजपा ने मुहर लगा दी।

पति विधायक राजू पाल की हत्या के बाद अतीक अहमद जैसे माफिया के खिलाफ न्याय की लड़ाई लड़ने वाली पूजा पाल की राजनीतिक हैसियत पर भाजपा ने मुहर लगा दी। पार्टी से उनकी नजदीकी तो लोकसभा चुनाव से ही थी लेकिन बृहस्पतिवार को भाजपा का प्रदेश उपाध्यक्ष बनाकर उसे सार्वजनिक कर दिया।

पूजा का यह कद यूं ही नहीं बढ़ा। लंबे राजनीतिक संघर्ष में उन्होंने अपनी सियासी जमीन तैयार की है। वर्ष 2005 में राजू पाल हत्याकांड के बाद राजनीति में सक्रिय हुईं पूजा पाल ने बसपा के टिकट पर चुनाव जीतकर विधानसभा में प्रवेश किया और लगातार दो बार विधायक बनीं। बाद में उन्होंने बसपा का साथ छोड़ समाजवादी पार्टी का दामन थामा।

सपा ने 2022 में उन्हें कौशाम्बी के चायल विधानसभा क्षेत्र से उम्मीदवार बनाया, जहां उन्होंने जीत दर्ज कर अपनी राजनीतिक पकड़ साबित की। लोकसभा चुनाव के दौरान पार्टी नेतृत्व से मतभेद के बाद उन्होंने सपा से दूरी बना ली और भाजपा के साथ हो गईं। करीब दो दशक के राजनीतिक सफर में पूजा ने कई उतार–चढ़ाव देखे, दल बदले और नई रणनीतियों

के साथ आगे बढ़ती रहीं। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि सहानुभूति से शुरू हुई उनकी राजनीति आज संघर्ष, संगठन क्षमता और जनाधार के दम पर नए मुकाम तक पहुंच चुकी है।

भाजपा ने पूजा के जनाधार, संघर्षशील छवि और राजनीतिक अनुभव को महत्व देते हुए संगठन में पदाधिकारी बनाया, लेकिन पार्टी की निगाह पाल बिरादरी पर भी है। प्रयागराज और कौशाम्बी के लगभग हर विधानसभा क्षेत्र में इस बिरादरी का अच्छा खासा वोट है, जो चुनाव का रुख पलट सकता है। इस बहाने भाजपा ने अति पिछड़ों को भी साधने की कोशिश की।

चायल से विधायक पूजा पाल को भाजपा का प्रदेश उपाध्यक्ष बनाए जाने के बाद उनके समर्थकों और शुभचिंतकों में खुशी की लहर है। सोशल मीडिया पर बधाइयों का तांता लगा है। दरअसल, हाल ही में हुए मंत्रिमंडल विस्तार के दौरान पूजा पाल का नाम संभावित मंत्रियों की सूची में चर्चा में रहा था। उनके समर्थकों को उम्मीद थी कि उन्हें सरकार में जगह मिलेगी। जब मंत्रिमंडल की सूची में उनका नाम शामिल नहीं हुआ तो समर्थकों में निराशा भी देखने को मिली थी। लेकिन समर्थकों की खुशी लौट आई है। आत्मसम्मान पर लगी चोट तो छोड़ दी सपारू पूजा पाल भाजपा की प्रदेश उपाध्यक्ष बनाए जाने के बाद चायल विधायक पूजा पाल ने सपा तीखा हमला बोला है। कहा कि सपा में रहते हुए उन्हें धीरे–धीरे अहसास हुआ कि वहां सम्मान सिर्फ दिखावे का है। आत्मसम्मान और अधिकारों की बात पर पार्टी आपके साथ खड़ी नजर नहीं आती। पूजा ने कहा कि लंबे संघर्षों के बाद जब उन्हें न्याय मिला और उन्होंने अपनी बात रखनी चाही तो उन्हें चुप रहने की सलाह दी गई। अखिलेश यादव पर निशाना साधते हुए पूजा पाल ने कहा कि भाजपा मंत्रिमंडल विस्तार को लेकर जब कोई बातचीत ही नहीं हुई थी, तब उस पर व्यंग्य करना किसी बड़े नेता की गरिमा के अनुरूप नहीं है। उन्होंने कहा कि एक महिला विधायक पर लगातार तंज कसना महिलाओं के प्रति सपा की सोच को उजागर करता है।

प्रदेश उपाध्यक्ष बनने पर उन्होंने कहा कि यह पद उनके लिए सम्मान के साथ बड़ी जिम्मेदारी भी है। वह भाजपा की विचारधारा और संगठन को जमीनी स्तर पर और मजबूत बनाने के लिए पूरी निष्ठा से कार्य करेंगी। 2027 के विधानसभा चुनाव एक बार फिर कमल खिलेगा।

मुहर्रम जुलूस के दौरान घूमने निकले किशोर की करंट से मौत, परिवार में मचा कोहराम

प्रयागराज। मुहर्रम जुलूस के दौरान घूमने निकले बहादुरगंज हटिया निवासी मोहम्मद हमजा (17) की शुक्रवार तड़के करंट लगने से मौत हो गई। कोतवाली क्षेत्र के सेवई मंडी के पास हल्की बारिश के बीच बिजली के पोल में उतरे करंट की चपेट में आने से यह हादसा हुआ। मुहर्रम जुलूस के दौरान घूमने निकले बहादुरगंज हटिया निवासी मोहम्मद हमजा (17) की शुक्रवार तड़के करंट लगने से मौत हो गई। कोतवाली क्षेत्र के सेवई मंडी के पास हल्की बारिश के बीच बिजली के पोल में उतरे

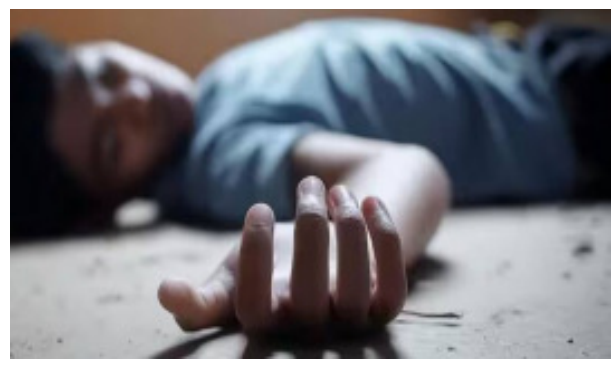

करंट की चपेट में आने से यह हादसा हुआ। घटना के बाद मौके पर अफरा–तफरी मच गई। बताया गया कि मोहम्मद हमजा मुहर्रम का जुलूस देखने और घूमने के लिए घर से निकला था। तड़के हल्की बारिश हो रही थी। इसी दौरान सेवई मंडी के पास वह सड़क किनारे लगे बिजली के पोल के संपर्क में आ गया। आशंका है कि बारिश के कारण पोल में करंट उतर आया था। करंट लगते ही वह गंभीर रूप से झुलस गया। स्थानीय लोगों ने उसे तत्काल अस्पताल पहुंचाया, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। घटना की सूचना मिलते ही कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। हादसे के बाद परिवार में कोहराम मच गया। कोतवाली थाना प्रभारी नितेंद्र शुक्ला ने बताया कि करंट लगने से किशोर की मौत हुई है। मामले की जांच की जा रही है। प्रथम दृष्टया बारिश के कारण बिजली के पोल में करंट उतरने की आशंका है। जांच के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

दिल्ली पुलिस हेड कांस्टेबल भर्ती में 51 और अभ्यर्थी शॉर्टलिस्ट, अभ्यादनों की जांच के बाद आयोग का फैसला

प्रयागराज। कर्मचारी चयन आयोग (एसएससी) ने दिल्ली पुलिस हेड कांस्टेबल परीक्षा–2025 के लिए 51 अतिरिक्त अभ्यर्थियों

को अगले चरण की चयन प्रक्रिया के लिए शॉर्टलिस्ट किया है।

कर्मचारी चयन आयोग (एसएससी) ने दिल्ली पुलिस हेड कांस्टेबल परीक्षा–2025 के लिए 51 अतिरिक्त अभ्यर्थियों को अगले चरण की चयन प्रक्रिया के लिए शॉर्टलिस्ट किया है। एसएससी ने यह निर्णय ओबीसी (दिल्ली एनसीटी) श्रेणी से संबंधित अभ्यावेदनों की जांच के बाद लिया है। चयनित अभ्यर्थियों को शारीरिक दक्षता व मापन परीक्षण (पीई एंड एमटी), दस्तावेज सत्यापन और ट्रेड टेस्ट में शामिल होना पड़ेगा।

एसएससी ने पांच जून को परीक्षा का परिणाम घोषित किया था। परिणाम के बाद कुछ अभ्यर्थियों ने बताया कि उन्होंने आवेदन सामान्य व ईडब्ल्यूएस श्रेणी में किया था जबकि उनके पास ओबीसी (दिल्ली एनसीटी) का वैध प्रमाणपत्र उपलब्ध है। इस आधार पर ओबीसी श्रेणी के तहत विचार किए जाने की मांग की थी। एसएससी ने सभी अभ्यावेदनों की जांच कर संबंधित अभ्यर्थियों की पात्रता का पुनर्मूल्यांकन किया। जांच के बाद 51 अतिरिक्त अभ्यर्थियों को योग्य पाया गया। इनमें 28 पुरुष और 23 महिला अभ्यर्थी शामिल हैं। आयोग ने इन अभ्यर्थियों की सूची अपनी वेबसाइट पर अपलोड कर दी है।

13 साल तक कोई पहचान नहीं, फिर एक मुलाकात ने बदल दी किस्मत

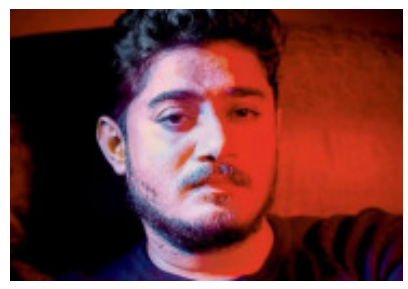

प्रयागराज। सिविल लाइंस निवासी विक्रम मोंट्रोज बॉलीवुड के चर्चित संगीतकार और गायक हैं। उनकी नई फिल्म ''वेलकम टू द जंगल'' आज 26 जून को रिलीज हो रही है। इस फिल्म के चार गाने पहले ही दर्शकों के बीच लोकप्रिय हो चुके हैं। सिविल लाइंस निवासी विक्रम मोंट्रोज बॉलीवुड के चर्चित संगीतकार और गायक हैं। उनकी नई फिल्म श्श्वेलकम टू द जंगलश्श आज 26 जून को रिलीज हो रही है। इस फिल्म के चार गाने पहले ही दर्शकों के बीच लोकप्रिय हो चुके हैं। विक्रम 18 साल की उम्र में संगीत के सपने लेकर मुंबई पहुंचे थे। उन्होंने 2005 में मुंबई में कदम रखा। वहां उन्हें 13 साल तक लगातार संघर्ष करना पड़ा। उनकी मां शास्त्रीय संगीत से जुड़ी थीं, जिससे घर में हमेशा सुरों का माहौल रहता था। सेंट जोसेफ स्कूल में पढ़ाई के दौरान मंच पर गाना उनके जीवन का हिस्सा बन गया। 12वीं के बाद उन्होंने मुंबई जाने का फैसला किया था। संघर्ष के दिनों में कई बार उनका मन टूटा। लेकिन वे कुछ करके ही घर लौटने का दृढ़ संकल्प रखते थे। विक्रम की जिंदगी में अहम मोड़ तब आया जब उनकी मुलाकात अभिनेता संजय दत्त से हुई। संजय दत्त ने उनकी अप्रदर्शित धुनें सुनीं और उनमें छिपा जुनून पहचाना। यहीं से फिल्म ''संजू'' का रास्ता खुला। ''कर हर मैदान फतेह'' उनके संघर्ष की कहानी बन गया। इस गाने के लिए विक्रम को आईफा, फिल्मफेयर और मिर्ची म्यूजिक अवॉर्ड से सम्मानित किया गया है। विक्रम अपनी नई फिल्म ''वेलकम टू द जंगल'' को लेकर उत्साहित हैं। फिल्म के चार गाने रिलीज से पहले ही करोड़ों लोगों तक पहुंच चुके हैं। उनका कहना है कि फिल्म पूरी तरह मनोरंजन से भरपूर है। गानों में भी खुशी और मस्ती भरने की कोशिश की गई है। मुंबई में सफलता के बाद भी विक्रम का दिल आज भी प्रयागराज में बसता है। विक्रम का युवाओं के लिए संदेश है कि प्रतिभा को आगे बढ़ाने के लिए बड़े शहरों पर निर्भरता जरूरी नहीं है।

यूपी में मुहर्रम पर अंगारों पर चले लोग

ताजिया नापा तो एएसपी अनुज चौधरी पर भड़के मौलाना, जुलूस में करंट से 2 की मौत

लखनऊ (संवाददाता)। यूपी में आज (शुक्रवार) मुहर्रम के जुलूस को देखते हुए पुलिस अलर्ट मोड पर है। ड्रोन कैमरों से पूरे रूट की मॉनिटरिंग की जा रही है। श्रावस्ती में कर्बला के शहीदों की याद में अजादार दहकते अंगारों पर चले। 'या हुसैन' की सदाओं से माहौल गमगीन हो गया।

एटा में शुक्रवार तड़के ताजिया हाईटेंशन तार से टच हो गया। इसके बाद ताजिए में करंट उतर गया। हादसे में युवक की मौत हो गई। 7 गंभीर रूप से झुलस गए। प्रयागराज में भी करंट से एक 17 साल के लड़के की मौत हो गई। संभल SP केके बिश्वनोई ने फोर्स के साथ फ्लैग मार्च किया।

इधर, फिरोजाबाद ैच्अनुज चौधरी के फीते से ताजिया नापने पर आल इंडिया शिया पर्सनल लॉ बोर्ड के महासचिव मौलाना यासूब अब्बास भड़क गए। उन्होंने कहा– ताजियों की इस प्रकार नाप–जोख किए जाने से धार्मिक भावनाएं आहत हुई हैं। ताजियों का अपमान है। यूपी सरकार से मांग करता हूं कि अनुज चौधरी को तत्काल सस्पेंड किया जाए।

लखनऊ में 2 लाख से अधिक लोग ताजिए के जुलूस में शामिल हो सकते हैं। जुलूस इमामबाड़े से निकल कर कर्बला तालकटोरा जाएगा। जुलूस में शामिल सभी लोग काले कपड़े पहनेंगे और नंगे पांव मातम करेंगे। बता दें कि आज ही के दिन कर्बला में पैगंबर मोहम्मद साहब के छोटे नवासे हजरत इमाम हुसैन यजीदी फौज से जंग करते हुए 72 साथियों के साथ शहीद हो गए थे।

बरेली में इमाम हुसैन की शहादत को याद करते हुए शुक्रवार को शिया मुस्लिमों ने मातम मनाया। चाकू छुरी का मातम करते हुए जुलूस निकाला गया। इसमें लहराते अलम परचम जहां कर्बला की जंग का एहसास कर रहे थे। किला जामा मस्जिद पर एकत्र अजादारों ने जंजीरों, छुरियों से मातम किया। जिस्म लहूलुहान था, जुबां पर या हुसैन की सदाएं गूंज रही थीं। जुलूस किला, जामा मस्जिद रोड, जखीरा, जसोली से किला इमामबाड़ा फतेह निशान पहुंचा, जहां अंजुमनों ने नौहख्वानी की। लखनऊ में शिया चांद कमेटी के अध्यक्ष मौलाना सैफ अब्बास ने कहा कि कर्बला में 1387 साल पहले जो जंग हुई थी आज भी उसे याद कर रहे हैं। इमाम हुसैन को उनके छोटे बच्चों के साथ शहीद कर दिया गया था आज उसी का गम मना रहे हैं। इमाम हुसैन ने इंसानियत को बचाने के लिए और यजीद जैसे दहशत गर्द को बचाने के लिए जाने दिया था। यजीद दहश गर्द था जो चाहता था कि मानवता को खत्म किया जाए।

आशा ज्योति वनस्टॉप सेंटर में लगी आग, कर्मचारियों ने बुझाया

लखनऊ (संवाददाता)। लखनऊ के अलीगंज के भीषण अग्निकांड के बाद भी राजधानी में आग लगने की घटनाएं लगातार सामने आ रही हैं। शुक्रवार सुबह करीब डेढ़ घंटे के भीतर शहर के दो अलग–अलग इलाकों में आग लग गई। पहला मामला कानपुर रोड स्थित लोकबंधु अस्पताल परिसर में संचालित आशा ज्योति (वन स्टॉप) सेंटर का रहा, जबकि दूसरा मामला अमीनाबाद के गड़बड़झाला स्थित सिंगार महल मार्केट की एक दुकान में सामने आया। दोनों घटनाओं में समय रहते आग पर काबू पा लिया गया, जिससे कोई जनहानि नहीं हुई। हालांकि, वन स्टॉप सेंटर की घटना के बाद बिजली विभाग और दमकल विभाग की लापरवाही सामने आई हैं। सेंटर प्रभारी का कहना है कि गुरुवार शाम से बिजली बार–बार ट्रिप होने की शिकायत के बावजूद विभाग ने कोई कार्रवाई नहीं की। आग लगने के बाद भी जेई समेत कई कर्मचारियों को फोन किए गए, लेकिन किसी ने कॉल रिसीव नहीं की। मुख्य अग्निशमन अधिकारी के अनुसार शुक्रवार सुबह 5.50 बजे फायर स्टेशन आलमबाग को सूचना मिली कि लोकबंधु अस्पताल परिसर में संचालित आशा ज्योति केंद्र में आग लग गई है। सूचना मिलते ही प्रभारी अग्निशमन अधिकारी धर्मपाल सिंह आलमबाग फायर स्टेशन से दो फायर टेंडर मौके के लिए रवाना किए गए।मौके पर पहुंचने पर पता चला कि आग आशा ज्योति केंद्र के लाइट पैनल में लगी थी और लोकबंधु अस्पताल के अग्निशमन कर्मी पहले से ही आग बुझाने में जुटे हुए थे। फायर कर्मियों ने तत्काल हौज पाइप बिछाकर आग पर पूरी तरह काबू पा लिया। आग में लाइट पैनल और फॉल्स सीलिंग टूट हो गई, जबकि किसी प्रकार की जनहानि नहीं हुई। आशा ज्योति केंद्र की प्रभारी अर्चना सिंह ने बताया कि गुरुवार शाम से ही बिजली बार–बार ट्रिप हो रही थी। इसकी सूचना बिजली विभाग को दी गई थी, लेकिन समस्या का समाधान नहीं किया गया। शुक्रवार सुबह आग लगने के बाद जेई समेत विभागीय अधिकारियों को कई बार फोन कर विद्युत आपूर्ति बंद कराने का प्रयास किया गया, लेकिन किसी ने भी फोन रिसीव नहीं किया।उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि सूचना देने के बावजूद दमकल की गाड़ी करीब एक घंटे बाद मौके पर पहुंची। तब तक लोकबंधु अस्पताल के कर्मचारियों की मदद से आग पर काफी हद तक काबू पा लिया गया था। शुक्रवार सुबह 5.38 बजे फायर स्टेशन हजरतगंज कंट्रोल रूम को सूचना मिली कि अमीनाबाद के गड़बड़झाला स्थित सिंगार महल मार्केट में दुकान संख्या–81 में आग लग गई है। दुकान सिद्दीकी खान की बताई गई है। हजरतगंज और अमीनाबाद फायर यूनिट की दो गाड़ियां मौके पर पहुंचीं। जांच में पता चला कि आग दुकान के एयर कंडीशनर (एसी) में लगी थी। दुकान का शटर बंद था, जिसे काटकर दमकल कर्मियों ने मोटर फायर इंजन की मदद से आग पर पूरी तरह काबू पा लिया। इस घटना में भी कोई जनहानि नहीं हुई।

बिजली कटौती से गुस्साए लोगों का हंगामा,डंडे लेकर पावर हाउस पहुंचे

लखनऊ (संवाददाता)। राजधानी में भीषण गर्मी के बीच लगातार बिजली कटौती से लोग परेशान हो गए। गुस्साए लोगों ने गुरुवार–शुक्रवार की देर रात अपट्रॉन पावर हाउस का घेराव कर दिया। रात करीब एक बजे दो दर्जन से अधिक लोग हाथों में बांस के डंडे लेकर प्रदर्शन करने लगे। भीड़ को देखकर उपकेंद्र ऑपरेटर ने खुद को अंदर बंद कर लिया। इसके बाद लोगों ने उपकेंद्र के बाहर रास्ता रोककर विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों का कहना है कि पिछले सात दिनों में पांच दिन इलाके में लंबे समय तक बिजली आपूर्ति बाधित रही है। उनका आरोप है कि बिजली आते ही कुछ देर बाद ट्रांसफार्मर ट्रिप हो जाता है, जिससे बार–बार आपूर्ति ठप हो जाती है। बड़ी संख्या में लोगों ने उपकेंद्र घेर लिया जिसमें कुछ लोगों के हाथ में बांस का मोटा डंडा भी था। नाराज लोगों को देखकर उपकेंद्र ऑपरेटर ने गेट में अंदर से ताला बंद कर लिया। इससे भड़के लोगों ने उपकेंद्र के सामने सड़क पर सीढ़ी, ड्रम रखकर जाम लगा दिया। इस दौरान जमकर हंगामा और नारेबाजी किया। रास्ता बाधित होने की वजह से देखते ही देखते ट्रैफिक जाम लग गया। बढ़ते हंगामा को देखकर पुलिस ने मौके पर पहुंचे प्रदर्शनकारियों को समझाकर सड़क से सीढ़ी को हटाया और आवागमन को शुरू कराया। प्रदर्शनकारी रात करीब 4 बजे तक उपकेंद्र के आसपास ही डटे रहे। फॉल्ट ठीक होने के बाद सुबह 5.00 बजे बिजली चालू हो सकी। अधीक्षण अभियंता केके चौधरी ने दावा कि भूमिगत केबल में खराबी के कारण बिजली गुल हुई है। इसके बाद लगातार उस पर काम किया गया और समस्या को दूर किया गया। उपकेंद्र पर मौजूद वैभव कुमार ने कहा कि ढाई 250 परिवार बत्ती गुल होने से परेशान है। इन्होंने कहा कि टिकैत राय कॉलोनी में पिछले तीन दिनों से लगातार लाइट नहीं आ रही है रातों को हम लोग जाग रहे हैं। जो फाल्ट सही करके जा रहे हैं लाइट आते ही फौरन फिर खराब हो जा रहा है ट्रांसफार्मर पटाखे की तरह दग रहा है। दिन भर काम करते हैं और रात भर लाइट के लिए प्रदर्शन करते हैं इस नौटंकी से परेशान हो चुके हैं। मौके पर मौजूद मनोज अग्रवाल ने कहा कि बुधवार को रात में 11.00 बजे लाइट गई और गुरुवार को ढाई बजे दिन में आई। उसके बाद

रात में लगभग 9.00 बजे लाइट फिर कट गई और 3.00 बजने वाले हैं अभी तक नहीं आई कब आएगी पता नहीं। लाइट न होने की वजह से घर में पानी नहीं है , परिवार के लोग नहा , धो नहीं सकते बर्तन साफ करने का पानी नहीं है। लगातार कटौती की वजह से भीषण गर्मी में ठंडा पानी पीने को तरस रहे हैं। परेशानी इतनी है कि बयां नहीं कर सकते। दिन भर जो तार बदले गए थे वह सब जल गए। तार जल रहे थे तो ऐसी आतिशबाजी हुई कि पूरे मोहल्ले में उजाला हो गया। मौके पर मौजूद राकेश श्रीवास्तव ने बताया कि पिछले 7 दिनों में पांचवी रात ऐसी है जो जागते हुए काट रहे हैं। इधर बनकर जाते हैं उधर फिर शॉर्ट सर्किट हो जाता है क्या बनाते हैं कुछ समझ नहीं आता। संविदा कर्मचारियों से काम लिया जा रहा है अधिकारी आराम कर रहे हैं। लाइट न होने की वजह से बच्चों की तबीयत बिगड़ रही है भीषण गर्मी में उन्हें चक्कर आ रहा है गर्मी की वजह से उल्टियां हो रही है मगर कोई सुनने वाला नहीं।

लखनऊ सहित छह हवाई अड्डों के पास विकसित होगें एयरपोर्ट सिटी

परियोजना के पहले चरण में बीस हजार करोड़ का होगा निवेश

लखनऊ (संवाददाता)। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ सहित देश के प्रमुख छह हवाई अड्डों के पास एयरपोर्ट सिटी विकसित करने की परियोजना तैयार की गयी है। इस परियोजना की अदाणी एयरपोर्ट होल्डिंग्स लिमिटेड (एएएचएल) की पूर्ण स्वामित्व वाली इकाई अदाणी एयरपोर्ट सिटी लिमिटेड (एएसीएल) ने घोषणा करते हुये बताया कि परियोजना के पहले चरण में बीस हजार करोड़ रूपये का निवेश किया जायेगा। इस परियोजना में लखनऊ के अलावा चार अन्य राज्यों में स्थित मुंबई, नवी मुंबई, अहमदाबाद, जयपुर और गुवाहाटी में स्थित एयरपोर्ट भी शामिल है। इस परियोजना के अन्तर्गत हवाई अड्डा नेटवर्क के आसपास आतिथ्य, रिटेल, मनोरंजन, कन्वेंशन और व्यावसायिक सुविधाओं को एक साथ जोड़ते हुए सहज रूप से जुड़े, पैदल चलने योग्य दूरी पर शहरी केंद्र विकसित किए जाएंगे।

एएएचएल के निदेशक जीत अदाणी ने कहा दुनिया भर में कई हवाई अड्डे व्यापार, पर्यटन और शहरी विकास के प्रमुख केंद्र बन चुके हैं। भारत में विमानन क्षेत्र के विस्तार के साथ हवाई अड्डे निवेश, रोजगार और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देने में अहम भूमिका निभा सकते हैं। कंपनी ऐसे आधुनिक शहरी केंद्र विकसित कर रही है, जो यात्रियों को बेहतर सुविधाएं देने के साथ–साथ शहरों के विकास को भी गति देंगे। यह विकास योजना पांच राज्यों के छह हवाई अड्डों में फैले 655 एकड़ से अधिक भूमि बैंक पर आधारित है। इनमें से करीब 440 एकड़ भूमि केवल मुंबई और नवी मुंबई में स्थित है। प्रस्तावित निवेश का लगभग 70 प्रतिशत हिस्सा भी इन्हीं दोनों शहरों में किया जाएगा, जो देश के प्रमुख वाणिज्यिक, वित्तीय और विमानन केंद्रों में गिने जाते हैं। इन परियोजनाओं के तहत ऐसे एकीकृत, एयरपोर्ट के नजदीक शहरी केंद्र विकसित किए जाएंगे, जहां यात्री, कारोबार और स्थानीय समुदाय होटल, दफ्तर, खरीदारी, खानपान, मनोरंजन और कन्वेंशन सुविधाओं तक पहुंच पा सकेंगे। इन्हें हवाई अड्डों, मेट्रो और शहर के अन्य ट्रांसपोर्ट इंफ्रास्ट्रक्चर से भी सहज रूप से जोड़ा जाएगा, ताकि लोगों को बेहतर सुविधा मिल सके। कंपनी ने बताया कि यह परियोजना सिंगापुर के चांगी, दुबई इंटरनेशनल, एम्स्टर्डम के शिफोल और सियोल के इंचियोन जैसे दुनिया के सफल एयरपोर्ट विकास मॉडलों से प्रेरित है। इसका उद्देश्य भारत के तेजी से बढ़ते विमानन क्षेत्र में हवाई अड्डों को विकास और आर्थिक गतिविधियों के केंद्र के रूप में विकसित करना है। जीत अदाणी ने कहा, इन परियोजनाओं की रूपरेखा वैश्विक डिजाइन और इंजीनियरिंग विशेषज्ञों के सहयोग से तैयार की जा रही है। इसमें होटल, खरीदारी, कार्यस्थलों और मनोरंजन क्षेत्र की बदलती जरूरतों को ध्यान में रखा गया है। हमारा लक्ष्य ऐसे शहरी केंद्र विकसित करना है, जो कनेक्टिविटी और अनुभव को साथ लेकर आएं आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा दें, रोजगार के अवसर पैदा करें और आसपास के समुदायों के लिए दीर्घकालिक मूल्य सुनिश्चित करें। लॉन्च कार्यक्रम के दौरान कंपनी ने परियोजना की योजना, डिजाइन, निर्माण और प्रबंधन से जुड़े अपने विभिन्न साझेदारों को भी सम्मानित किया। इनमें मास्टर प्लानिंग और आर्किटेक्चर क्षेत्र से कोहन पेडरसन फॉक्स (केपीएफ), बेनॉय और जनेरा स्पेस, निर्माण, डिजाइन और बिल्ड क्षेत्र से लार्सन एंड टुब्रो (एलएंडटी), टाटा प्रोजेक्ट्स लिमिटेड और पीएसपी प्रोजेक्ट्स लिमिटेड तथा कंसल्टिंग और प्रोजेक्ट मैनेजमेंट क्षेत्र से सीबीआरई, जेएलएल और कुशमैन एंड वेकफील्ड जैसी कंपनियां शामिल हैं।

हजरत हुसैन जन्नत में युवाओं के सरदार हैं : मुस्तफा नदवी

सुन्नी यूथ फेडरेशन द्वारा सालाना जलसा

युवा में हुसैन वह सुविधा इस्लाम

लखनऊ (संवाददाता)। परलोक में सफलता इस संसार में बिताए गए जीवन और कर्मों पर निर्भर करती है। हजरत हुसैन (र.अ.व.), जिन्हें अल्लाह के रसूल (स.अ.व.) ने जन्नत में नौजवानों का सरदार बताया है, निःसंदेह इस संसार में उनके कर्म अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। जन्म से लेकर शहादत तक, हजरत हुसैन का संपूर्ण जीवन आस्था की परिपक्वता और दृढ़ विश्वास का प्रतीक है। यह इस बात का भी प्रमाण है कि किसी भी मोमिन के किसी भी कार्य या शब्द से दूसरे को हानि नहीं पहुँचनी चाहिए। पूरे खिलाफत काल में और उसके बाद भी, हजरत हुसैन को चारों खलीफा हजरत अबू बकर सिद्दीकी हजरत उमर फारूक हजरत उस्मान गनी और हजरत अली मिर्जा से कोई शिकायत नहीं करना ही इन खलीफा को या किसी और सहाबी को हजरत हुसैन से कोई शिकायत हुई। ये विचार मौलाना मुहम्मद मुस्तफा नदवी मदानी ने ऑल इंडिया सुन्नी यूथ फेडरेशन के अंतर्गत हजरत उमर फारूक मस्जिद के पास स्थित खान हाउस रोशनबाद कॉलोनी में आयोजित यौम हुसैन और इस्लाम के शहीदों के सालाना जलसे में व्यक्त किए। जलसे का आगाज कारी रिजवान फारूकी द्वारा पवित्र कुरान के पाठ से हुआ और मुहम्मद यमान मुस्तफा ने अल्लाह के नाम पेश किये। सुन्नी यूथ फेडरेशन के संस्थापक सदस्य खालिद हलीम खान की अध्यक्षता में हुई इस बैठक में मौलाना मदानी ने कहा कि इस्लाम के उदय और प्रसार के साथ ही वे सभी शक्तियां, विशेषकर कैसर, किसरा और रोम की शक्तियां, जिनका घमंड और अहंकार चकनाचूर हो गया, यह समझ गईं कि वे मुसलमानों का सीधा सामना नहीं कर सकतीं, इसलिए उन्होंने षड्यंत्र रचने शुरू कर दिए।

प्यारा एक गुलाब

(कुण्डलिया)

घर के गुलशन में खिला, प्यारा एक गुलाब।
कहने को यह फूल है, है यह एक किताब।
है यह एक किताब, प्यार के परिभाषा की।
गाते है जो गीत, दिलों के अभिलाषा की।
सुन लो कहें प्रदीप, बात छोटी सी कहके।
प्यारा है नगमात, महकते गुलशन घर के।।

पुस्तक से बाहर निकल, करता जब आदाब।
सूखे हुए गुलाब ने, महकाया तब ख्वाब।
महकाया तब ख्वाब, सुहानी यादें बनकर।
मन के सारे भाव, महकते हैं बन ठनकर।
सुन लो कहें प्रदीप, कर रही धड़कन धक धक।
कहती मधुर प्रसंग, गुलाबी लगती पुस्तक।।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

शहर समता विचार मंच की ऑनलाइन काव्य गोष्ठी सफलतापूर्वक सम्पन्न

प्रयागराज। शहर समता विचार मंच के तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित ऑनलाइन काव्य गोष्ठी गूगल मीट के माध्यम से अत्यंत सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता रचना सक्सेना ने की तथा उमेश श्रीवास्तव मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण के साथ हुआ। अनुराधा गर्ग ने द्वारा सरस्वती वंदना एवं कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन उमा मिश्रा श्प्रीतिश ने किया। योग विषय पर आयोजित इस काव्य गोष्ठी में छाया सक्सेना श्प्रभुश, श्रद्धा श्रीवास्तव, आशा जाकड़, साधना शुक्ला, शशि जायसवाल, रेखा श्रीवास्तव, साधना खरे तथा पूनम पांडे सहित सभी रचनाकारों ने योग, स्वास्थ्य और सकारात्मक जीवन–दृष्टि पर आधारित उत्कृष्ट काव्य–पाठ। आभार ज्ञापन उमा मिश्रा 'प्रीति' द्वारा।

भयहरणनाथ धाम भूमि विवाद–ताजा अपडेट

16वां सामाजिक सत्याग्रह और किसान पंचायत 28 जून को

–जनहित में जिलाधिकारी से सहयोग की हुई सामूहिक अपील

प्रतापगढ़। प्रसिद्ध पांडव कालीन भयहरणनाथ धाम में कब्जा मुक्ति हेतु 15 मार्च से निरंतर सामाजिक सत्याग्रह करने वाले रचनात्मक सत्याग्रहियों ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया है कि आगामी 28 जून को धाम परिसर में एक क्षेत्रीय किसान पंचायत का आयोजन किया जाएगा। इस रचनात्मक आंदोलन को भारतीय किसान यूनियन (अम्बावता) का नैतिक समर्थन प्राप्त हुआ है।

यूनियन के पदाधिकारियों ने चेतावनी दी है कि यदि जिला प्रशासन ने सार्वजनिक भूमि को जल्द खाली नहीं कराया, तो जनपद (जिला) स्तर पर बड़ा आंदोलन शुरू किया जाएगा।

श्भयहरणनाथ धाम क्षेत्रीय विकास संस्थानश के महासचिव समाज शेखर के अनुसार, राजस्व विभाग की टीम ने 5 जून को भूमि के सीमांकन और पत्थर गाड़ने की प्रक्रिया शुरू तो की थी, लेकिन उसके बाद से कोई ठोस प्रशासनिक कार्रवाई आगे नहीं बढ़ी है। उन्होंने बताया कि इससे पहले भी राजस्व अधिकारियों (कानूनगो और लेखपाल) ने पैमाइश करने का संकल्प लिया था, लेकिन तहसीलदार स्तर से उचित समन्वय व सहयोग न मिलने के कारण टीम मौके पर नहीं पहुंच सकी थी। प्रशासनिक ढिलाई को देखते हुए सत्याग्रहियों और 5–सदस्यीय समन्वय समिति ने जिलाधिकारी (क्ड) से सीधे हस्तक्षेप कर मामले का त्वरित और स्थायी कानूनी समाधान निकालने की मांग की है।

जमीन विवाद में फायरिंग करने वाले 2 आरोपी गिरफ्तार

लखनऊ (संवाददाता)। दुबग्गा थाना क्षेत्र में जमीनी विवाद को लेकर हुई फायरिंग के मामले में पुलिस ने 2 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए आरोपियों के पास से एक अवैध 32 बोर की पिस्टल भी बरामद हुई है। पुलिस ने दोनों को न्यायिक हिरासत में भेज दिया है और अन्य नामजद व अज्ञात आरोपियों की तलाश जारी है। पुलिस के मुताबिक, छंदोइया निवासी सैफ खान ने तहरीर दी थी। इसमें उन्होंने आरोप लगाया कि जमीनी विवाद के चलते छह नामजद और 20–25 अज्ञात लोगों ने मिलकर उन्हें और उनके मित्र अकरम को घेर लिया। आरोप है कि आरोपियों ने गाली–गलौज करते हुए जान से मारने की नीयत से फायरिंग की। गोली लगने से दोनों सुरक्षित बच गए। जाते समय आरोपियों ने जान से मारने की धमकी दी।

सम्पादकीय.....

सूखे की आहट

दक्षिण–पश्चिम मॉनसून के कमजोर रहने की चिंताओं के बीच देश के कृषि क्षेत्र के सामने सूखे की चुनौती पैदा होने की आशंका बलवती हुई है। हाल–फिलहाल बारिश में चालीस से छियालीस प्रतिशत की कमी मापी गई है। देश के मौसम विज्ञान विभाग द्वारा दो जुलाई तक मानसून की सक्रियता कम रहने के अनुमान के कारण खरीफ की फसल को लेकर चिंताएं बढ़ रही हैं। केंद्र सरकार ने कम बारिश वाले 315 जिलों में से 111 ऐसे जिलों की पहचान की है, जो सूखे की दृष्टि से ज्यादा जोखिम वाले हो सकते हैं। जो आसन्न संकट की गंभीरता को भी दर्शाता है। यह विडंबना है कि तमाम सिंचाई सुविधाओं के विस्तार के बावजूद आज देश में खेती की मॉनसून की बारिश पर निर्भरता बनी हुई है। यही वजह है कि मॉनसून में देरी या कम बारिश होने का सीधा असर फसल की बुवाई, खाद्यान्न की पैदावार, ग्रामीणों की आय और खाने–पीने की वस्तुओं की महंगाई के रूप में पड़ता है। ऐसे में यदि जुलाई व अगस्त माह के महत्वपूर्ण समय में बारिश सामान्य से कम होती है तो इसके परिणाम चिंता बढ़ाने वाले हो सकते हैं। केंद्र सरकार राज्य और जिले स्तर पर आपातकालीन योजनाएं तैयार कर रही है। सरकार सूखे में भी बेहतर उत्पादन कर सकने वाली फसलों को बढ़ावा देने के साथ ही जल संरक्षण पर जोर दे रही है। साथ ही कोशिश है कि किसानों के लिये बीज–उर्वरकों की पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित की जाए। देश में दालों, तिलहन और मोटे अनाजों की खेती को प्राथमिकता देना जरूरी है, क्योंकि ये फसलें कम पानी में भी सामान्य उत्पादन दे सकती हैं। सुखद ही है कि अल नीनो मॉनिटरिंग सेल को सक्रिय किया गया ताकि कृषि विज्ञान केंद्रों के जरिये रियल–टाइम सलाह किसानों को देकर सूखे के प्रभावों को कम किया जा सके। निश्चित रूप से पूरी तैयारी के साथ सूखे से मुकाबले का मतलब है कि हमने आधी लड़ाई जीत ली है। आज जरूरत इस बात की है कि सूखे की आशंका के बीच जल संकट से मुकाबले के लिये एक प्रभावी समग्र नीति बने। समय–समय पर इन नीतियों में सुधार किया जाए। जरूरी है कि जलवायु परिर्वतन संकट के दौर में मानसून के व्यवहार में अनिश्चितता के बीच खेती की बारिश पर निर्भरता को कम करने के लिये व्यापक रणनीति तैयार की जाए। इसके लिये जरूरी है कि सूक्ष्म–सिंचाई सुविधा का विस्तार, जल निकायों के पुनरुद्धार, भूजल प्रबंधन को बेहतर बनाने और जलवायु के अनुरूप खेती को बढ़ावा देने के प्रयास हों। हम मौसम के बदलते मिजाज पर हर बार प्रतिक्रिया देने के बजाय दीर्घकालिक राष्ट्रीय प्राथमिकताएं सुनिश्चित करें। हमें किसानों को आर्थिक संकट से उबारने को अपनी वरीयता सूची में शामिल करना चाहिए। विडंबना यह है कि प्राकृतिक आपदाओं से फसलों की रक्षा के लिये बीमा कवरेज अभी भी ज्यादा प्रभावी नहीं है। किसानों को फसलों को क्षति पहुंचने पर मुआवजा लेने के बारे में व्यावहारिक जानकारी अक्सर कम ही होती है। वैसे तो देश में अनाज का पर्याप्त भंडारण है और आपातकालीन व्यवस्था के चलते देश की खाद्य सुरक्षा को तुरंत कोई बड़ा खतरा नहीं है। लेकिन हमें लाखों किसानों का जीविका संरक्षण भी प्राथमिकता के आधार पर करना चाहिए। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि देश में मौसम के मिजाज में होने वाला बदलाव अब कभी–कभार की बाधा नहीं रही, बल्कि बार–बार होने वाली सच्चाई बन गया है। मानसून के व्यवहार में लगातार अनिश्चितता को देखते हुए देश के नीति–निर्माताओं को खेती संरक्षण के लिये एक ऐसा तंत्र बनाने की जरूरत है, जो मौसम के बदलावों का बेहतर ढंग से मुकाबला कर सके। तभी हम भविष्य की अनिश्चितताओं का सही तरीके से सामना कर सकेंगे। साथ ही हमें देश में पानी के सदुपयोग की दिशा में भी पहल करने की जरूरत है। देश में जलाशयों के जल का किफायती उपयोग हो। निस्संदेह, कम बारिश से केवल किसान व ग्रामीण अर्थव्यवस्था ही प्रभावित नहीं होती है, सूखे में खाद्यान्न की उत्पादकता घटने पर अनाज महंगा होने से आम आदमी का जीवन भी बाधित होता है। जिससे किसान की ही नहीं, पूरे देश की अर्थव्यवस्था प्रभावित हो सकती है।

कारोबार और सत्ता के रिश्ते पर गहराती बहस

राजु कुमार

मध्यप्रदेश की राजनीति में समय–समय पर ऐसे विवाद सामने आते रहे हैं, जिन्होंने सत्ता और संपत्ति के रिश्ते पर सवाल खड़े किए हैं। अभी हाल ही में राष्ट्रीय दैनिक इंडियन एक्सप्रेस की विस्तृत जांच रिपोर्ट ने दावा किया है कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के परिवार, करीबी रिश्तेदारों और उनसे जुड़ी कंपनियों ने पिछले दो वर्षों में उज्जैन और उसके आसपास बड़े स्तर पर भूमि खरीदी की है। रिपोर्ट में विशेष रूप से इस बात की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है कि इन खरीदों का एक बड़ा हिस्सा उन क्षेत्रों में दिखाई देता है, जहां सड़क परियोजनाएं, कॉरिडोर, बायपास, भूमि उपयोग परिवर्तन या अन्य विकास गतिविधियां प्रस्तावित अथवा क्रियान्वित हो रही हैं यानी इस खरीदी में एक खास पैटर्न दिखाई देता है। रिपोर्ट सामने आने के बाद कांग्रेस, वाम दलों और अन्य विपक्षी दलों ने मामले की स्वतंत्र जांच की मांग की है। दूसरी ओर भाजपा ने इस प्रकरण पर जवाब दिया है कि मुख्यमंत्री के रिश्तेदार स्वतंत्र कारोबारी हैं और उनके निजी लेन–देन को मुख्यमंत्री से जोड़ना उचित नहीं है। दो दशक पहले शिवराज सिंह चौहान के मुख्यमंत्री बनने के बाद सामने आया डंपर प्रकरण भी ऐसा ही एक मामला था। उस विवाद में भी शुरुआती बहस किसी अपराध के सिद्ध होने की नहीं थी। लेकिन आरोप इतने गंभीर थे कि मामला अदालतों तक पहुंचा, जांच हुई और वर्षों तक मध्यप्रदेश की राजनीति में बहस का विषय बना रहा। डॉ. मोहन यादव का परिवार लंबे समय से रियल एस्टेट कारोबार में सक्रिय रहा है। उज्जैन उनका गृह नगर है। आने वाले सिंहस्थ को देखते हुए वहां लगातार विकास कार्यों की घोषणाएं हो रही हैं। ऐसी स्थिति में यदि परिवार या रिश्तेदार भूमि खरीदते हैं, तो केवल इसी आधार पर सीधे किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचा जा सकता कि इसमें घोटाला हुआ है। लेकिन सवाल यह है कि आखिर ऐसा पैटर्न क्यों दिखाई दे रहा है? यदि एक खोजी रिपोर्ट भूमि अभिलेखों, मास्टर प्लान, सड़क परियोजनाओं और भूमि खरीद के बीच एक संबंध रेखांकित करती है, तो उसे केवल राजनीतिक आरोप कहकर खारिज नहीं किया जा सकता। लोकतंत्र में कई बार सवाल किसी एक लेन–देन से नहीं, बल्कि अनेक घटनाओं के बीच दिखाई देने वाले क्रम और प्रवृत्ति से पैदा होते हैं। उज्जैन भूमि प्रकरण में भी यही स्थिति है। उज्जैन में सिंहस्थ की तैयारियों के कारण आने वाले वर्षों में भूमि का महत्व और बढ़ना तय है। सड़क, बायपास, कॉरिडोर, आवासीय और व्यावसायिक विस्तार जैसी घोषणाएं किसी भी शहर के भूमि बाजार को सीधे प्रभावित करती हैं। उज्जैन भूमि प्रकरण को उस व्यापक विकास परिदृश्य में भी देखने की आवश्यकता है, जो इस समय पूरे क्षेत्र की तस्वीर बदल रहा है। सिंहस्थ–2028 की तैयारियों के तहत उज्जैन और आसपास के क्षेत्रों में हजारों करोड़ रुपये की अधोसंरचना परियोजनाएं क्रियान्वित की जा रही हैं। मार्च 2025 तक सिंहस्थ से जुड़े 2,329 करोड़ रुपये के कार्य विभिन्न विभागों के माध्यम से प्रगति पर थे। इसके अतिरिक्त जल संसाधन विभाग की 2,533 करोड़ रुपये की तीन परियोजनाएं, ऊर्जा विभाग की 329 करोड़ रुपये की छह परियोजनाएं, 9,650 करोड़ रुपये की दो और चार लेन सड़क परियोजनाएं, 382 करोड़ रुपये की पर्यटन परियोजनाएं तथा 259 करोड़ रुपये की सांस्कृतिक परियोजनाएं प्रस्तावित अथवा क्रियान्वित हैं। मेडिसिटी और मेडिकल कॉलेज जैसी स्वास्थ्य परियोजनाएं भी इस विकास योजना का हिस्सा हैं। राज्य सरकार केंद्र से सिंहस्थ के लिए 20,000 करोड़ रुपये के विशेष पैकेज की मांग भी कर चुकी है। ऐसी परिस्थितियों में यदि सत्ता के करीब माने जाने वाले परिवार और उससे जुड़े कारोबारी समूह उन्हीं इलाकों में सक्रिय दिखाई देते हैं, तो जनता के मन में संदेह पैदा होना स्वाभाविक है। यदि किसी खोजी रिपोर्ट में विकास परियोजनाओं और भूमि निवेश के बीच एक विशेष मेल सामने आता है, तो मामला केवल जमीन खरीदने का नहीं रह जाता। वह विकास की दिशा, भूमि निवेश और सार्वजनिक पद की नैतिक जवाबदेही से भी जुड़ जाता है। ऐसे प्रश्नों पर स्वतंत्र जांच की मांग को अस्वाभाविक नहीं माना जा सकता। कांग्रेस का तर्क है कि उसने मुख्यमंत्री की जाति या सामाजिक पृष्ठभूमि पर सवाल नहीं उठाया है, बल्कि भूमि खरीद और विकास परियोजनाओं के बीच दिखाई दे रहे संबंधों पर सवाल खड़े किए हैं। भाजपा की ओर से इसे पिछड़े वर्ग के नेतृत्व को बदनाम करने का प्रयास बताया गया है। यह राजनीतिक जवाब हो सकता है, लेकिन इससे मूल सवाल का समाधान नहीं होता। यदि संदेह भूमि सौदों को लेकर है, तो उसका उत्तर भूमि सौदों और उनसे जुड़े तथ्यों से ही आएगा। जांच की मांग को केवल विपक्षी राजनीति के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। यदि वास्तव में सभी भूमि खरीद सामान्य कारोबारी गतिविधियों का हिस्सा हैं एवं विकास परियोजनाओं और जमीन खरीद के बीच कोई अनुचित संबंध नहीं है, तो निष्पक्ष जांच का सामना करना चाहिए। इस पूरे विवाद का राजनीतिक पक्ष भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। मुख्यमंत्री बनने के बाद यह डॉ. मोहन यादव से जुड़ा पहला बड़ा व्यक्तिगत विवाद बनकर उभरा है। यदि आने वाले दिनों में और दस्तावेज, नए तथ्य या अतिरिक्त भूमि लेन–देन सामने आते हैं, तो विवाद और गहरा सकता है। जुलाई में विधानसभा का मानसून सत्र शुरू होने वाला है। स्वाभाविक है कि विपक्ष इस मुद्दे को सदन में भी उठाएगा। उज्जैन भूमि प्रकरण में जरूरी है कि राजनीतिक बयानबाजी से ऊपर उठकर तथ्यों की निष्पक्ष जांच हो। क्योंकि इस मामले का सबसे महत्वपूर्ण सवाल अभी भी अनुत्तरित है। यदि सब कुछ सामान्य है, तो फिर सत्ता और संपत्ति के बीच यह पैटर्न बार–बार दिखाई क्यों दे रहा है? और यदि यह केवल संयोग है, तो इसकी पुष्टि करने का सबसे अच्छा तरीका स्वतंत्र जांच ही है।

संविधान की शपथ फिर याद करने की जरूरत

सर्वमित्रा सुरजन

केरल हाई कोर्ट ने तिरुवनंतपुरम नगर निगम के 20 भाजपा पार्षदों और एक कांग्रेस पार्षद की शपथ को रद्द कर दिया है, क्योंकि इन लोगों ने देवताओं, शहीदों के नाम पर शपथ ली थी। 21 दिसंबर 2025 को तिरुवनंतपुरम नगर निगम चुनाव के बाद शपथ ग्रहण समारोह में भाजपा के कई पार्षदों ने जहां गुरुदेव, भारतमाता, काविलम्मा, अट्टुकल अम्मा, श्री पद्मनाभस्वामी, अयप्पा जैसे देवी–देवताओं के नाम पर शपथ ली तो कुछ ने अपने राजनीतिक संगठन के शहीदों के नाम पर भी शपथ ली। जबकि कांग्रेस पार्षद सुनील चुवत्तुपडम ने तो शपथ में श्भगवान की कृपा और ओमेन चांडी के नाम पर कहा था। इस तरह शपथ लेने के खिलाफ हाईकोर्ट में याचिकाएं दायर हुईं, जिन पर सुनवाई करते हुए जस्टिस पी.वी. कुन्हिकृष्णन ने अपने फैसले में कहा कि कानून में साफ–साफ लिखा है कि पार्षद शपथ भगवान के नाम पर या बिना किसी नाम के केरल म्यूनिसिपल एक्ट 1994 के तहत तय फॉर्मेट में सत्यनिष्ठा से प्रतिज्ञा ले सकते हैं। कोर्ट ने यह फै सला सुनाते हुए श्री नारायण गुरु के प्रसिद्ध संदेश का भी जिक्र किया कि, श्एक जाति, एक मत, एक दैवं मनुष्यनु। अर्थात समस्त मानवों के लिए एक ही जाति, एक ही धर्म, और एक ही ईश्वर है। केरल हाई कोर्ट ने कहा कि सभी धर्मों के भगवान को सिर्फ ईश्वर कहकर बुलाया जाए तो सारी समस्या खत्म हो जाएगी। इसके साथ हाईकोर्ट ने एक अहम टिप्पणी में कहा कि, श्शपथ लोकतंत्र में बेहद अहम होती है। यह वादा होता है कि चुना हुआ प्रतिनिधि ईमानदारी से काम करेगा, संविधान का पालन करेगा और लोगों की सेवा करेगा। इसलिए शपथ बिल्कुल कानून के अनुसार ही लेनी चाहिए।

केरल हाईकोर्ट की इस बात को संसद और प्रधानमंत्री कार्यालय से लेकर हरेक राज्य, हरेक सरकारी दफ्तर, हरेक मंत्रालय में सुनाए और पढ़ाए जाने की जरूरत है। प्रधानमंत्री मोदी जब मन की बात करते हैं तब भाजपा के अध्यक्ष से लेकर सारे मुख्यमंत्रियों और मंत्रियों को विद्यार्थियों की तरह सुनने बिठा दिया जाता है। वैसे ही इस शपथ को भी सभी को फिर से सुनाने की जरूरत है। रेडियो प्रसारण के बारे में हमेशा यही कहा जाता रहा है कि चलते–फिरते अपना काम करते हुए आप रेडियो सुन सकते हैं, इसमें टीवी की तरह बंधन नहीं है कि एक ही जगह पर बैठ कर सुना जाए। लेकिन मन की बात को नरेन्द्र मोदी ने रेडियो का बंधनकारी प्रसारण बना दिया है। बहरहाल, मूल विषय पर आया जाए कि शपथ की लोकतंत्र में जो अहमियत है, उसे केरल हाईकोर्ट ने याद दिलाया है और इसमें निर्वाचित प्रतिनिधियों की जिम्मेदारी भी बताई है कि उन्हें ईमानदारी से काम करते हुए संविधान का पालन करना होता है। अगर सरकारें बढ़–चढ़ कर बातें किए बिना केवल इसी शपथ पर काम करें तो देश की सारी व्यवस्था सुचारू चलेगी। और तरक्की भी अपने आप दिखाई देगी। तब हजारों करोड़ के विज्ञापन देकर जनता को यह बताना नहीं पड़ेगा कि देश आगे बढ़ रहा है। अभी तो आलम ऐसा है कि जो हो रहा है उसे छिपाया जा रहा है और जो नहीं हो रहा है उसका आभासी माहौल बनाया जा रहा है। अभी एक टीवी चौनल के कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पहुंचे थे, जहां उन्होंने राष्ट्र प्रथम, राष्ट्र सर्वोपरि जैसे शब्दों के इर्द–गिर्द अपना पूरा भाषण समेटा और उसमें अर्थव्यवस्था, कनेक्टिविटी, किसानों की बेहतरी, अच्छी स्वास्थ्य सुविधाएं, मध्यवर्ग और गरीबों के आर्थिक लाभ के लिए किए गए उपाय जैसे विषयों पर अपनी सरकार की उपलब्धियों को गिनाया। इसमें विपक्ष पर तंज भी कसा कि कुछ लोग विकास की पहलों का विरोध करते हैं। जाहिर है उनके निशाने पर राहुल गांधी ही थे, जिन्होंने ग्रेट निकोबार प्रोजेक्ट को लेकर मुहिम छेड़ी हुई है कि हजारों सालों में बने जंगलों और समुद्र के नीचे की अद्भुत प्राकृ तिक संपत्ति को निजी हाथों में न दिया जाए, क्योंकि इस नुकसान की भरपाई कभी नहीं हो पाएगी। मोदी को अगर विपक्ष के विरोध से आपत्ति है, तो वे अपने सही तर्कों से उसे खारिज करें, लेकिन इसकी जगह वे केवल आरोप लगाना जानते हैं। टीवी चौनल के मंच से दिया गया उनका भाषण या संसद में दिए उनके भाषण या संसद में राष्ट्रपति के अभिभाषणों में कोई फर्क ही अब नजर नहीं आता है। हमेशा केवल अपनी सरकार की वाहवाही की जाती है। जब इतना ही अच्छा काम हो रहा है और अपने पद की शपथ को ईमानदारी से निभाया जा रहा है, तो बार–बार जनता को सड़कों पर क्यों उतरना पड़ता है। अभी 22 जून को ही लखनऊ में कोचिंग सेंटर अग्निकांड में 15 बच्चे मारे गए, जिसके एक चश्मदीद युवक ने कहा कि हम लोग तो मरने के लिए ही बने हैं। इस एक वाक्य में कितनी गहरी निराशा छिपी हुई है, यह जाहिर है, बस सत्ता पर बैठे लोग इसे अनदेखा कर रहे हैं। देश का आम आदमी जब यह समझने लगे कि बुनियादी सुविधाओं से लेकर शिक्षा, नौकरी, इलाज, यात्रा, सुरक्षित माहौल हर बात के लिए कदम–कदम पर जूझना ही उसकी नियति है, तो यह असल में उस सरकार की असफलता का सबसे बड़ा प्रमाणपत्र है, जो सब चंगा सी का दावा लगातार कर रही है। भारत की जनता तो अब धर्म के नाम पर हो रही लूटपाट को भी शायद नियति मान चुकी है। इसलिए जिन लोगों ने अयोध्या में एक धक्का और देकर बाबरी मस्जिद को तोड़ा, कारसेवा को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया, बाबरी मस्जिद को तोड़कर कंधों पर चढ़कर खुशियां मनाईं और फिर राम मंदिर बन जाने को देश की अहम उपलब्धि माना, उन लोगों में राम मंदिर में हो रही चोरी को लेकर कोई उद्वेलन या पीड़ा या आक्रोश नहीं दिख रहा है। पाठक जानते हैं कि राम मंदिर बनने के वक्त से ही कहीं जमीनों की खरीद–फरोख्त में हेरा–फेरी के मामले आए, तो कहीं सड़क सौंदर्यीकरण के नाम पर घोटाला हुआ। राम मंदिर निर्माण के लिए जो ट्रस्ट फरवरी 2020 में सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद बना, उसमें भी गड़बड़ी की खबरें आई थीं। द इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट के अनुसार ट्रस्ट गठन के कुछ महीने बाद ही नवंबर 2020 में एक प्राइवेट ऑडिट फर्म ने ट्रस्ट के फंड मैनेजमेंट और डेटा मैनेजमेंट की जांच की। रिपोर्ट में साफ चेतावनी दी गई थी कि चंदे का कोई व्यवस्थित रिकॉर्ड नहीं है। उस ऑडिट रिपोर्ट में सुधार के लिए कई सिफारिशें भी की गई थीं। जैसे हर लेन–देन, डेटा एंट्री और स्टाफ के लिए सिस्टेमैटिक ऑपरेटिंग प्रोसेस यानी एसओपी बनाना जरूरी है। लेकिन ऐसी कोई पहल नहीं की गई। खबर है कि ट्रस्ट को अब तक करीब 3500 करोड़ रुपये नकद चंदे के रूप में मिले हैं, इसके अलावा सोने–चांदी के आभूषण भी चढ़ावे में आए हैं। मगर अब चांदी सोने के आभूषण, चांदी की ईंटे, चांदी के काग भुषुंडी जैसे दान में दी गई कई बहुमूल्य वस्तुएं गायब हैं और साथ ही करोड़ों का नकद चंदा भी गायब है या उसका हिसाब–किताब ठीक से नहीं रखा गया। आरोप हैं कि दानपात्रों से रोजाना आने वाले लाखों रुपये की गिनती से पहले या गिनती के दौरान हेराफेरी की गई।

खबरें ये भी हैं कि चढ़ावा गिनती वाले क्षेत्र का 7–8 महीने का सीसीटीवी फुटेज गायब किया गया है। 7 जून को जब अखिलेश यादव ने आरोप लगाया तो इस पर राजनीतिक विवाद भी बढ़ा। अब योगी सरकार ने एसआईटी गठित की है, जिसकी शुरुआती रिपोर्ट में कई स्तरों पर लापरवाही पाए जाने की बात सामने आ रही है।

ग़ज़ल

शोर –कोलाहल भरी सी है सड़क की ज़िंदगी
भीड से सहमी– डरी सी है सड़क की ज़िंदगी

आन्दोलन, मोर्चे , धरने , जुलूसों के लिए
नित्य प्रति बिछती दरी सी है सड़क की ज़िंदगी

टूटी–फूटी, उजड़ी–उखड़ी,पस्त ख़स्ताहाल में
बेबसी और भुखमरी सी है सड़क की ज़िंदगी

सभ्यता के द्वंद्व में पल–पल सिकुड़ती जा रही
वेदना की सहचरी सी है सड़क की ज़िंदगी

हर घड़ी बेख़ौफ़ जनता के रुआबों की हनक
झेलकर भी शब–भरी सी है सड़क की ज़िंदगी

– डॉ० अवनीश यादव
पी०ई०एस०
(प्रांतीय शिक्षा सेवा संवर्ग)
उत्तर प्रदेश

समाज में उठ रही गंभीर चेतावनियां

पुणे में घटित केतन अग्रवाल हत्याकांड ने एक बार फिर भारतीय समाज की उन परतों को उधेड़ दिया है, जिन्हें देखते–समझते हुए भी अक्सर नजरें फेर ली जाती हैं, क्योंकि हमें आदर्शवादी समाज का दिखावा बनाए रखना है। असीम संभावनाओं से भरे 26 साल के केतन अग्रवाल की हत्या उनकी मंगेतर सिया गोयल ने अपने प्रेमी चेतन चौधरी के साथ मिलकर कर दी। पुणे के पास लोहागढ़ के किले में ट्रेकिंग के बहाने सिया केतन को ले गई, उससे पहले अपने जन्मदिन का जश्न केतन के साथ मनाया और बाकायदा सोशल मीडिया पर उसे डाला भी। उन वीडियो को देखकर जरा सा अनुमान नहीं लगाया जा सकता कि इस दौरान कितनी भयावह योजना उसके दिमाग में चल रही होगी। लोहागढ़ किले में जब केतन और सिया पहुंचे तो उनके साथ–साथ चेतन चौधरी भी पहुंचा, जिसके साथ मिलकर सिया ने केतन को ऊंचाई से धक्का दे दिया। इसके बाद सोशल मीडिया पर फिर पोस्ट डाली कि जन्मदिन पर तुम मुझे छोड़ कर चले गए। पहले पहल इसे सामान्य दुर्घटना मानकर सिया के लिए ही सबकी सहानुभूति उमड़ी कि नवंबर में इनकी शादी होनी थी, जिसके लिए दोनों परिवार जमकर तैयारी कर रहे थे। जयपुर में शाही अंदाज में शादी करवाने के लिए 17 करोड़ रूपयों में एक महल भी बुक करवा लिया गया था, लेकिन उससे पहले इतना बुरा हादसा हो गया। पुलिस ने जब इस दुर्घटना की जांच शुरु की तो कुछ अजीबोगरीब संयोगों पर नजर गई, जैसे शादी से पहले की फोटोग्राफी करवाने के लिए यह जोड़ा बाली जाने वाला था, और एक दिन पहले केतन का पासपोर्ट अचानक गुम हो गया। 14 जून को भी सिया और केतन लोहागढ़ ट्रेक पर गए थे, जहां केतन को सिया ने धक्का दिया था और उसने झाड़ी पकड़कर खुद को बचाया था, तब सिया ने कहा था कि उसने सांप देखा और केतन की जान बचाने के लिए घबराहट में उसे धक्का दिया। लेकिन 18 जून को जब यह जोड़ा फिर से लोहागढ़ ट्रेक पहुंचा तो इस बार उनके करीब ही एक युवक सर्दियों में पहने जाने वाली हुडी को पहना हुआ था और उसका चेहरा छिपा था, जबकि पुणे में अभी गर्मी ही है। पुलिस ने जब इन सारे तथ्यों की गहराई से पड़ताल की तो यह समझने में वक्त नहीं लगा कि यह सामान्य हादसा नहीं बल्कि सोची–समझी साजिश के तहत की गई हत्या थी। अब सिया पुलिस की गिरफ्त में है, केतन के घरवाले स्वाभाविक तौर पर उसके लिए कड़ी से कड़ी सजा की मांग कर रहे हैं। उनका एक ही सवाल है कि अगर किसी और से प्यार था और केतन से शादी नहीं करनी थी, तो पहले ही अपने घरवालों को मना कर देना था, इसके लिए हमारे बेटे को मारने की क्या जरूरत थी। ठीक ऐसा ही सवाल पिछले साल मेघालय में क्रूरता से मारे गए राजा रघुवंशी के घर वाले भी पूछ रहे थे। जब राजा से शादी करने के चंद दिनों बाद सोनम ने अपने प्रेमी के साथ मिलकर उनकी हत्या कर दी थी। असल में इन्हें प्रेमी या प्रेमिका कहना प्रेम जैसे पवित्र भाव का अपमान करने जैसा है, ये अपराध में भागीदार होते हैं, इससे ज्यादा इन्हें और कुछ नहीं कहा जा सकता। क्योंकि जो प्रेम करेगा, वह अपने साथी को कभी गलत दिशा में कदम उठाने नहीं कहेगा। बहरहाल, इंदौर से लेकर पुणे तक अपने जीवनसाथी को मारने की घटनाएं समाज में बढ़ती आपराधिक प्रवृत्ति को तो दिखाती ही हैं, साथ ही यह संकेत भी देती हैं कि एक बनी–बनाई लीक पर समाज को चलाने की कोशिश कई बार कितने भयावह परिणाम लाती है। न जाने क्यों भारतीय समाज में अपनी मर्जी से जीवनसाथी चुनने या किसी से प्यार करने के बाद शादी करने को हिकारत से देखा जाता है। आज के दौर में भी बहुत से अभिभावक यह कहने से हिचकते हैं कि उनकी बेटी या बेटे ने अपनी मर्जी से जीवनसाथी चुना है। पितृसत्तात्मक समाज बेटे की पसंद को एक बार सहजता से स्वीकार कर भी ले, लेकिन अधिकतर घरों में बेटियां खुलकर जीवनसाथी के लिए अपनी मर्जी का इजहार कर ही नहीं पाती हैं। अगर करें तो उसे या तो पाश्चात्य संस्कृ ति का दुष्प्रभाव बताया जाता है, या फिर निर्लज्जता की श्रेणी में डाला जाता है। शायद इसी वजह से कई बार सही राह पर चलकर अपनी मर्जी बताने की जगह हत्या करने जैसा आपराधिक कदम उठाया जाता है, जिसकी कोई माफी नहीं दी जा सकती। जो इंसान किसी दूसरे की जान लेने जैसा अतिरेक भरा कदम उठा सकता है, वो इतनी हिम्मत क्यों नहीं जुटा पाता कि शादी के लिए अपनी मर्जी बताए या मां–बाप के दबाव को मानने से इंकार करे। सिया गोयल और सोनम रघुवंशी दोनों को अगर वाकई अपने पसंद के लड़कों से शादी करनी थी या मां–बाप की मर्जी से शादी नहीं करनी थी, तो वे पहले बता सकती थीं, इससे घर बर्बाद नहीं होते, न ही विवाह जैसी संस्था से भरोसा उठता। मगर इन्होंने गलत राह चुनी। हालांकि इनके कारण केवल लड़कियों पर सवाल उठाने से इस गंभीर समस्या का समाधान नहीं मिलेगा। अभी बीते दिनों नोएडा से लेकर भोपाल तक दहेज हत्याओं या ससुराल में मिली प्रताड़ना के कारण हुई मौतों के मामले सामने आए, जिनमें नवयुवतियों की जिंदगी बर्बाद हुई और उनके मां–बाप जिंदगी भर का दुख अब उठा रहे हैं। यह सब इसलिए हो रहा है क्योंकि बड़ों के सामने खुलकर अपनी राय रखने को आज भी बदतमीजी बताया जाता है। हमारे जमाने में तो बिना दिखाए–बताए शादी हो जाती थी और कोई हूं–चूं नहीं करता था, जैसी बातें सुनाकर नयी पीढ़ी को तिरस्कृत करना आम बात है। अच्छी संतानें उन्हें ही माना जाता है जो बिना ना–नुकुर के, बिना किसी सवाल के बड़ों के फैसले को मान ले। इसमें मां–बाप तो आज्ञाकारी संतान होने की खुशी मना लेते हैं, लेकिन अपनी मर्जी दबाने की कुंठा कई तरीकों से बाहर आती है, जिसमें अक्सर जीवनसाथी ही प्रभावित होते हैं।

'ये बात अकेले में बतानी चाहिए थी', फैन के प्यार के इजहार पर शाहरुख खान का मजेदार जवाब

> उनका यह जवाब सुनकर वहां मौजूद लोग ठहाके लगाकर हंस पड़े। हालांकि इसके बाद शाहरुख ने बहुत ही प्यार भरे अंदाज में बात को संभालते हुए कहा, 'मैं आपकी भावनाओं को समझता हूं, और मुझे यकीन है आपके पति भी समझते होंगे। मैं आप सबसे प्यार करता हूं३ आपके पति से भी, आपके परिवार से भी। धन्यवाद।'

हाल ही में मंगलुरु में हुए एक इवेंट के दौरान उनका एक मजेदार वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रहा है। वीडियो सामने आने के बाद फैंस उनके ह्यूमर की जमकर तारीफ कर रहे हैं। मंगलुरु में इवेंट के दौरान एक महिला फैन ने शाहरुख से कहा कि वह उन्हें अपने पति से भी ज्यादा प्यार करती हैं। यह सुनते ही शाहरुख खान हंस पड़े और तुरंत मजाकिया अंदाज में बोले, 'ये सब बातें अकेले में बतानी चाहिए ना।' उनका यह जवाब सुनकर वहां मौजूद लोग ठहाके लगाकर हंस पड़े। हालांकि इसके बाद शाहरुख ने बहुत ही प्यार भरे अंदाज में बात को संभालते हुए कहा, 'मैं आपकी भावनाओं को समझता हूं, और मुझे यकीन है आपके पति भी समझते होंगे। मैं आप सबसे प्यार करता हूं३ आपके पति से भी, आपके परिवार से भी। धन्यवाद।' इस इवेंट में शाहरुख खान ने अपने सुपरहिट गानों पर परफॉर्म भी किया और फैंस के साथ खूब बातचीत की। उन्होंने कन्नड़ में 'नमस्कारा' कहकर सभी का स्वागत किया और मंगलुरु के लोगों के प्यार के लिए आभार जताया। शाहरुख ने यह भी बताया कि उनका मंगलुरु से खास कनेक्शन है, क्योंकि उन्होंने अपने बचपन के कुछ साल यहीं बिताए थे। वर्कफ्रंट की बात करें तो शाहरुख खान जल्द ही अपनी नई फिल्म 'किंग' में नजर आने वाले हैं। इस फिल्म में उनकी बेटी सुहाना खान भी साथ दिखेंगी, जो इस फिल्म से अपना थिएटर डेब्यू करेंगी। फिल्म में दीपिका पादुकोण, अभिषेक बच्चन, अरशद वारसी, राघव जुयाल और जयदीप अहलावत जैसे कलाकार भी अहम भूमिकाओं में नजर आएंगे। फिल्म को लेकर फैंस के बीच अभी से काफी एक्साइटमेंट बनी हुई है।

'रोमांस मिस कर रही हूं', भरत तख्तानी से तलाक के बाद प्यार की कमी महसूस कर रहीं ईशा देओल, कही ये बात

> ब्रेकअप होते हैं। मेरे पहले भी बॉयफ्रेंड रहे हैं, जिनसे मेरा ब्रेकअप हुआ। ये सब जिंदगी का हिस्सा है, लेकिन इससे मेरे प्यार को लेकर सोच नहीं बदलती। हम सबने हेमा जी और धर्मेंद्र जी के बीच का बिना शर्त वाला प्यार देखा है।'

हाल ही में ईशा देओल ने खुलकर बताया है कि अलग होने के बाद उनकी जिंदगी में 'प्यार और रोमांस' की कमी है। हाल ही में एक इंटरव्यू में उन्होंने कहा कि उन्हें रोमांटिक होना बहुत पसंद है। कर्ली टेल्स को दिए इंटरव्यू में ईशा ने कहा, 'मुझे लगता है कि प्यार और रोमांस किसी भी इंसान की जिंदगी में बहुत जरूरी होता है, और अभी मैं इसे मिस कर रही हूं। मुझे रोमांटिक होना बहुत पसंद है। मैं पूरी तरह से रोम–कॉम टाइप इंसान हूं। मुझे लव सॉन्ग्स और लव स्टोरीज बहुत पसंद हैं।' जब उनसे पूछा गया कि क्या इस अलगाव के बाद उनके प्यार को देखने का नजरिया बदल गया है, तो उन्होंने कहा, 'नहीं, ये चीजें नहीं बदलतीं। ब्रेकअप होते हैं। मेरे पहले भी बॉयफ्रेंड रहे हैं, जिनसे मेरा ब्रेकअप हुआ। ये सब जिंदगी का हिस्सा है, लेकिन इससे मेरे प्यार को लेकर सोच नहीं बदलती। हम सबने हेमा जी और धर्मेंद्र जी के बीच का बिना शर्त वाला प्यार देखा है।' ईशा ने यह भी बताया कि अलग होने के फैसले में उनका परिवार उनके साथ खड़ा रहा। उन्होंने कहा, 'ये बहुत पर्सनल बात है, जो दो लोगों के बीच होती है। हमारे जैसे प्रोफेशन में ये बातें पब्लिक में आ जाती हैं। मैं, भरत या उनका परिवार ऐसे मामलों में ज्यादा खुलकर बात करने वाले लोग नहीं हैं। उस समय हालात ऐसे थे और इसमें बच्चे भी शामिल हैं, इसलिए ये बहुत संवेदनशील समय होता है, जिसे बहुत संभलकर समझना पड़ता है।' ईशा देओल और भरत तख्तानी ने अपने अलग होने की वजह नहीं बताई, लेकिन एक जॉइंट स्टेटमेंट जारी कर कहा था कि यह फैसला उन्होंने आपसी सहमति से लिया है। उन्होंने कहा था, 'हमने आपसी सहमति और समझदारी से अलग होने का फैसला किया है। इस बदलाव के दौरान हमारे दोनों बच्चों का भला हमारे लिए सबसे ज्यादा जरूरी है। हम चाहते हैं कि हमारी प्राइवेसी का सम्मान किया जाए।' ईशा और भरत अपनी दो बेटियों राध्या और मिराया के माता–पिता हैं।

पेस्टिसाइड पर बड़ी लड़ाई! द इंडिया स्टोरी का टीजर रिलीज, खाने में जहर के खिलाफ कोर्ट में उतरीं काजल अग्रवाल

एक्ट्रेस काजल अग्रवाल और श्रेयस तलपड़े अगली फिल्म 'द इंडिया स्टोरी' में नजर आने वाले हैं। आज इस फिल्म का ट्रेलर रिलीज हो गया है, जिसके बाद फैंस की एक्साइटमेंट और बढ़ गई है। जानिए टीजर में क्या कुछ है खास। टीजर की शुरुआत एक बड़े प्रदर्शन से होती है, जहां किसान और आम लोग सड़कों पर उतरकर वकील अर्चना (काजल अग्रवाल) के खिलाफ विरोध करते नजर आते हैं। भीड़ उनकी गिरफ्तारी की मांग करती है और गुस्से में उनके पोस्टरों पर कालिख पोतती दिखाई देती है। इसके बाद कहानी कोर्टरूम में पहुंचती है। यहां श्रेयस तलपड़े का किरदार योगेश पांडे अपनी 7 साल की बेटी की मौत के लिए न्याय मांगता है। उसका कहना है कि उसकी बेटी की मौत कैंसर से नहीं, बल्कि खाने में मौजूद मिलावट और पेस्टिसाइड की वजह से हुई है। इस केस में काजल अग्रवाल का किरदार अर्चना पेस्टिसाइड बनाने वाली कंपनियों के खिलाफ लड़ाई करती नजर आती हैं।

टीजर के आखिर में एक चौंकाने वाला सीन भी है, जहां प्रदर्शन के बीच एक महिला काजल अग्रवाल को थप्पड़ मार देती है। यह फिल्म पेस्टिसाइड और खाने में मिलावट जैसे गंभीर मुद्दे को सामने लाती है और दिखाती है कि कैसे यह धीरे–धीरे हमारी सेहत और आने वाली पीढ़ियों को प्रभावित कर रहा है। फिल्म का निर्देशन चेतन डीके ने किया है और इसे सागर बी शिंदे ने लिखा और प्रोड्यूस किया है। फिल्म में भारत के एक बड़े लेकिन कम चर्चा में रहने वाले पब्लिक हेल्थ इश्यू को दिखाया जाएगा। फिल्म के को–प्रोड्यूसर्स में स्वाति विनायक सैंदाने, अनीता जाधव, विनायक सैदानी, कल्पेश शाह, देवयानी खोराटे और प्रेम जोशी शामिल हैं। वहीं फिल्म की टेक्निकल टीम में सिनेमैटोग्राफर निशांत भगवत, म्यूजिक कंपोजर मंगेश धाकड़े, एडिटर आशीष म्हात्रे, गीतकार शकील आजमी और साउंड डिजाइनर अनमोल भावे हैं। 'द इंडिया स्टोरी' 24 जुलाई 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। यह फिल्म हिंदी, तेलुगु और तमिल भाषाओं में दुनियाभर में रिलीज की जाएगी।

ऑस्कर–नॉमिनेटेड एन ब्लिथ का 98 साल की उम्र में निधन, इस फिल्म से मिली थी पहचान, जानें उनके जीवन के बारे में

एन ब्लिथ को खासतौर पर 1945 की फिल्म 'मिलड्रर्ड पियर्सड' में निभाए गए उनके किरदार 'वेदा' के लिए जाना जाता है। इस रोल के लिए उन्हें बेस्ट सपोर्टिंग एक्ट्रेस के ऑस्कर अवॉर्ड के लिए नॉमिनेशन भी मिला था। एन ब्लिथ का करियर काफी लंबा और शानदार रहा। उन्होंने ब्रॉडवे, फिल्मों, म्यूजिकल्स, टीवी और ओपेरा में काम किया। वह एक बेहतरीन ओपेरा सिंगर भी थीं। फिल्म 'द ग्रेट कारुसो' (1951) में उन्होंने मशहूर सिंगर मारियो लांजा के साथ काम किया और एक पॉपुलर गाना भी पेश किया। इसके अलावा वह 'किस्मेट', 'रोस मैरी' और 'द स्टूडेंट प्रिंस' जैसी फिल्मों में भी नजर आईं। 'मिलड्रर्ड पियर्सड' की शूटिंग खत्म होने के कुछ ही दिनों बाद एन एक स्लेजिंग एक्सीडेंट का शिकार हो गई थीं, जिसमें उनकी पीठ पर गंभीर चोट आई। उन्हें कई महीनों तक बॉडी कास्ट और व्हीलचेयर पर रहना पड़ा। लेकिन इसके बावजूद उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और 1946 के ऑस्कर अवॉर्ड्स में भी खास ड्रेस पहनकर शामिल हुईं। एन ब्लिथ का जन्म 16 अगस्त 1927 को न्यूयॉर्क में हुआ था। बचपन से ही उन्हें सिंगिंग और एक्टिंग का शौक था। उन्होंने सिर्फ 6 साल की उम्र में रेडियो पर गाना और कविता सुनाना शुरू कर दिया था। बाद में उन्होंने ब्रॉडवे पर काम किया और यहीं से उनके करियर को बड़ी पहचान मिली। एन ने 1953 में जेम्स मैकनल्टी से शादी की थी और उनके पांच बच्चे हैं। उनके पति का निधन 2007 में हुआ था। एन ब्लिथ को हमेशा उनके शानदार अभिनय, म्यूजिक और लंबे करियर के लिए याद किया जाएगा। उन्होंने हॉलीवुड में अपनी एक खास पहचान बनाई, जो हमेशा लोगों के दिलों में जिंदा रहेगी।

80–90 के दशक की सादगी पर फिदा हैं नीलम कोठारी, कहा– गोविंदा के साथ होता था मुकाबलाय याद किए पुराने दिन

एक्ट्रेस नीलम कोठारी ने पुराने दिनों को याद करते बताया कि उन्हें आज के मुकाबले पुराना दौर ज्यादा पसंद है। उन्होंने अपने यूट्यूब व्लॉग में उस समय की सादगी और खूबसूरती को याद करते हुए कई दिलचस्प बातें शेयर कीं। नीलम ने कहा कि उस समय शूटिंग के दौरान आज जैसी सुविधाएं नहीं होती थीं। ना तो एसी होता था और ना ही वैनिटी वैन। उन्होंने बताया, 'हम सेट पर पहुंचते ही पसीने से तर हो जाते थे। मेकअप और हेयर में घंटों लगते थे, लेकिन फिर भी सब बिगड़ जाता था। फिर भी अगर मुझसे पूछा जाए कि मुझे कौन सा दौर पसंद है, तो मैं 80–90 का समय ही चुनूंगी, क्योंकि उसमें एक अलग सादगी और खूबसूरती थी।' नीलम ने गोविंदा के साथ अपनी केमिस्ट्री को याद करते हुए बताया कि दोनों के बीच खासकर डांस में दोस्ताना मुकाबला होता था। उन्होंने कहा, 'जब हम साथ में गाने शूट करते थे, तो लगता था कि कौन बेहतर डांस करेगा। हमारी यही केमिस्ट्री और सिंक्रोनाइजेशन लोगों को बहुत पसंद आया।' 'आप के आ जाने से' गाने का जिक्र करते हुए नीलम ने कहा कि यह उनके सबसे हिट गानों में से एक है। यह गाना 1987 की फिल्म खुदगर्ज में था, जिसे राकेश रोशन ने डायरेक्ट किया था। यह गाना आज भी लोगों के बीच काफी पॉपुलर है और उस दौर के सबसे आइकॉनिक डांस नंबर्स में गिना जाता है। जानकारी के लिए बता दें कि नीलम ने अपने करियर की शुरुआत 1984 में फिल्म 'जवानी' से की थी। इसके बाद उन्होंने 'लव 86', 'इल्जाम', 'हत्या', 'सिंदूर' और 'घराना' जैसी कई हिट फिल्मों में काम किया। गोविंदा और नीलम की जोड़ी उस समय इतनी हिट थी कि फैंस को लगता था कि दोनों असल जिंदगी में भी एक–दूसरे को डेट कर रहे हैं।

फ्रिज में रखी हरी मिर्ची भी सड़ जाती है तो इस तरह करें स्टोर, लंबे समय तक चलेगी

भीषण गर्मी के बाद मानसून की चिपचिपि, जिसमे सब्जियां अक्सर सड़कर खराब हो जाती है। ऐसे में उन्हें स्टोर करके लंबे समय तक रखना सबसे बड़ा मुश्किल का काम होता है। आमतौर पर सब्जियां दो से तीन दिन में खत्म हो जाती हैं। लेकिन हरी मिर्ची लंबा चलती है। लेकिन इसे अगर फ्रिज में भी स्टोर किया जाए तो ये कभी सूख जाती है तो कभी सड़ जाती है। अगर आपके साथ भी अक्सर ऐसा होता है तो जान लें हरी मिर्ची को स्टोर करके रखने का सही तरीका। जिससे सब्जी वालों के पास ये मिर्ची ज्यादा समय तक बची रहती है और ताजी बनी रहती है।

जूट की बोरी में रखे

सब्जियों को लंबे समय तक ताजा बनाकर रखने के लिए सब्जी वाले हमेशा जूट की बोरी का इस्तेमाल करते हैं। हरी मिर्ची को ताजा रखना है तो जूट की बोरी लें। इसमे हरी मिर्ची को लपेटकर रखें। साथ ही बोरी को हल्का सा पानी का छींटा मारकर भिगो दें। फिर ऐसी जगह पर रखें जहां फ्रेश हवा आती हो। हरी मिर्ची को इस तरह से रखने पर लंबे समय तक ये हरी और फ्रेश बनी रहती हैं।

एयर टाइट कंटेनर में स्टोर करें

हरी मिर्ची तो धोकर पेपर टॉवेल पर सुखा लें। फिर इनकी डंठल को बिना चाकू के काटकर अलग कर लें। काली और खराब मिर्ची को निकाल दें। किसी साफ–सूखे एयर टाइट कंटेनर में नीचे की तरफ पेपर टावेल या टिश्यू पेपर बिछाएं। फिर हरी मिर्चियों को रखें और ढक्कन बंद कर फ्रिज में रखें। इस तरह हरी मिर्ची थोड़ा ज्यादा समय तक फ्रेश बनी रहेंगी।

सूती कपड़े में लपेटे

अगर आपके पास जूट की बोरी नही है तो हरी मिर्ची को साफ सूती कपड़े में लपेटकर पानी से छीटें मार कर भिगो दें। फिर इसे किसी अंधेरे सूखे और फ्रेश एयर आने वाली जगह पर रखें। साथ ही हर दिन चेक करते रहें। जिससे कि कोई खराब मिर्ची बाकियों को ना खराब कर दे।

अखबार में रखें

अगर आप जल्दबाजी में हरी मिर्ची को स्टोर कर रही हैं फ्रिज में तो इसे प्लास्टिक की थैली में कतई ना रखें। बल्कि किसी पुराने अखबार में इसे लपेट सकती हैं। इससे गीली हरी मिर्ची सूख जाएंगी लेकिन सड़कर खराब नहीं होगी।

चटपटा खाने के हैं शौकीन? इस तरह से बनाएं तीखी मिर्च का अचार

ज्यादातर लोग खाने के साथ अचार खाना पसंद करते हैं। कुछ लोग आम का अचार खाते हैं तो कुछ लोग नींबू या मिर्ची का अचार खाना पसंद करते हैं। अगर आप तीखा खाने के शौकीन हैं और खाने के साथ अक्सर तीखी मिर्ची

खाना पसंद करते हैं तो आप इससे टेस्टी अचार भी डाल सकते हैं। यहां हम बता रहे हैं तीखी हरी मिर्ची का अचार कैसे डालें।

मिर्ची का अचार बनाने के लिए आपको चाहिए....

हरी मिर्च
सौंफ
धनिया
अजवाइन
मेथी दाना
कलौंजी
राई
हल्दी
नमक
हींग
सरसों का तेल

कैसे बनाएं

इसे बनाने के लिए सबसे पहले हरी मिर्च को अच्छी तरह से धो लें। फिर इसे बीच से काट लें और कुछ देर के लिए धूप में सुखाने के लिए रखें । जब तक मिर्ची सूख रही हैं तब तक मसाला तैयार करें। इसके लिए सौंफ, धनिया, अजवाइन और राई को पहले ड्राई रोस्ट करें और फिर पीस लें। अब मिर्ची को एक बर्तन में निकालें और इसमें पीसा हुा मसाला मिलाएं। अब इसमें मेथी दाना, कलौंजी के साथ नमक, हल्दी और हींग मिलाएं। अच्छे से मिक्स कें और फर सरसों का तेल मिलाएं। अच्छे से मिक्स करें। अचार को किसी कंटेनर में निकालें और फिर इसे कुछ देर के लिए धूप में रखें, वैसे तो इसे दो दिन के लिए धूप में रख सकते हैं। लेकिन अभी गर्मियां हैं तो आप एक दिन के लिए इसे धूप में रखें।

सफेद बालों को नेचुरली काला करने में मदद करता है भृंगराज, ऐसे करें इस्तेमाल

उम्र के साथ बालों का सफेद होना आम बात है लेकिन ये बाल जब 20 और 30 की उम्र में ही सफेद होना शुरू हो जाएं तो चिंता होने लगती है। आजकल की लाइफस्टाइल और केमिकल वाले प्रोडक्ट बालों के सफेद होने की वजह होते हैं। कई बार तो पानी में मिले हार्मफुल केमिकल भी बालों को सफेद कर देते हैं। इस तरह के प्रीमेच्योर ग्रे हेयर पर कलर लगाना ठीक नहीं होता। ऐसे में नेचुरल आयुर्वेद के नुस्खे काम आ सकते हैं। आयुर्वेद में भृंगराज को सफेद बालों के लिए असरदार बताया गया है। इसे नेचुरल डाई है। जिसे लगाने से बालों का रंग काला होने में मदद मिलती है। तो चलिए जानें कैसे इस्तेमाल करें भृंगराज।

बालों को सफेद करने के लिए कैसे करें इस्तेमाल भृंगराज
भृंगराज तेल
या पाउडर
पानी
ग्लव्स

भृंगराज को बालों में लगाने का तरीका

बाल अगर समय से पहले ही सफेद हो रहे हैं तो भृंगराज तेल को बालों की जड़ों में लगाएं। करीब एक घंटे के लिए लगा रहने दें फिर किसी माइल्ड शैंपू से बाल धो लें।

–भृंगराज की पत्तियों को सुखाकर पाउडर बना लें। इस पाउडर में पानी मिलाएं और गाढ़ा पेस्ट तैयार कर लें। इस पेस्ट यानी नेचुरल डाई को ग्लव्स की मदद से स्कैल्प से लेकर बालों के सिरों तक लगाएं। करीब एक से दो घंटे के बाद बालों को पानी से धो दें।

बनाएं घर में भृंगराज का तेल

आप चाहें तो घर में ही भृंगराज का तेल बनाकर बालों में लगा सकते हैं। इसे बनाने के लिए तिल के तेल में भृंगराज की करीब एक मुठ्ठी पत्तियों को डालकर उबालें। जब ये तेल आधा हो जाए तो गैस की फ्लेम बंद कर दें। इस तेल को बालों में हल्के हाथों से मसाज करें और करीब दो से तीन घंटे बाद बाल धो लें। होममेड इस तेल से बालों के सफेद होने की समस्या कम होगी और बाल शाइनी, मजबूत बनेंगे।

क्या होता है किडनी कैंसर? एक्सपर्ट से जानें बचाव के उपाय और सलाह

किडनी कैंसर, भारत सहित दुनिया भर में लोगों के लिए एक चिंता का विषय बन गया है। डॉक्टरों की मानें तो किडनी कैंसर का देरी से पता चलने की वजह से हजारों लोग हर साल अपनी जान गंवा देते हैं। इसके अलावा, बीमारी को लेकर जागरूकता की कमी भी कैंसर के मरीजों के बढ़ने का एक कारण है। 1.3 बिलियन से अधिक की आबादी के साथ, भारत को गुर्दे के कैंसर से निपटने में हर दिन एक नई चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। जिसके पीछे कई बार खराब जीवन शैली, तम्बाकू का उपयोग, मोटापा और पर्यावरण के विषाक्त पदार्थों के संपर्क में आना वजह हो सकती है। ऐसे में आइए जानते हैं डॉ. पंकज वाधवा, (सीनियर डायरेक्टर – यूरोलॉजी,मेदांता, गुरूग्राम) से आखिर कब होता है किडनी कैंसर और क्या हैं इससे बचने के उपाय।

क्या है किडनी कैंसर–

किडनी कैंसर एक प्रकार का कैंसर है जो किडनी की कोशिकाओं में विकसित होता है। यह तब होता है जब गुर्दे में असामान्य कोशिकाएं अनियंत्रित रूप से बढ़ती हैं, जिससे ट्यूमर बनता है। कैंसर एक या दोनों गुर्दों को प्रभावित कर सकता है और यदि इसका शीघ्र उपचार न किया जाए तो यह शरीर के अन्य भागों में भी फैल सकता है।

किडनी कैंसर की रोकथाम के लिए उठाएं ये जरूरी कदम–

धूम्रपान न करें–

गुर्दे के कैंसर का सबसे प्रमुख कारण धूम्रपान होता है। यदि आप धूम्रपान करते हैं, तो उसे छोड़कर आप इस जोखिम को कम कर सकते हैं। इसके अलावा अगर आप धूम्रपान नहीं करते हैं, तो ऐसे लोगों के संपर्क में आने से बचें जो धूम्रपान कर रहे हों।

स्वस्थ वजन बनाए रखें––

अधिक वजन या मोटापे से ग्रस्त लोगों में गुर्दे के कैंसर का खतरा बढ़ जाता है। ऐसे में संतुलित आहार और नियमित शारीरिक गतिविधि के माध्यम से स्वस्थ वजन बनाए रखें।

स्वस्थ आहार–

फलों, सब्जियों, साबुत अनाज और प्रोटीन से भरपूर आहार का सेवन करें। रिफाइंड खाद्य पदार्थ, रेड मीट और उच्च वसा वाले डेयरी उत्पादों का सेवन सीमित मात्रा में करें। पानी खूब पीकर बॉडी को हाइड्रेटेड रखें।

बीपी रखें कंट्रोल–

आपको जानकर हैरानी होगी कि उच्च रक्तचाप गुर्दे के कैंसर के बढ़ते जोखिम से जुड़ा हुआ है। स्वस्थ आहार, नियमित व्यायाम, तनाव प्रबंधन, और डॉक्टर की सलाह द्वारा निर्धारित दवा के साथ जीवन शैली में बदलाव करके बीपी को कंट्रोल किया जा सकता है।

मधुमेह को रखें कंट्रोल–

यदि आप डायबिटीज रोगी है तो अपने शुगर लेवल को नियंत्रण में रखने की कोशिश करें। इसके लिए अपने फिजिशियन के साथ नियमित सम्पर्क में रहें। अनियंत्रित मधुमेह गुर्दे के कैंसर के खतरे को बढ़ा सकता है।

हाइड्रेटेड रहें–

किडनी को सेहतमंद बनाए रखने के लिए पर्याप्त मात्रा में पानी पिएं। इसके लिए डॉक्टर रोजाना कम से कम 8 गिलास पानी पीने की सलाह देते हैं। हालांकि उम्र और शरीर को देखते हुए पानी की जरूरत हर शरीर को अलग–अलग हो सकती हैं।

पारिवारिक इतिहास हो तो रहें सावधान–

यदि आपके परिवार में गुर्दे के कैंसर का कोई पारिवारिक इतिहास है या फिर कोई वंशानुगत स्थितियां हैं, तो इसके बारे में अपने डॉक्टर से जरूर बात करें ऐसा करने पर आपका डॉक्टर आपका मार्गदर्शन करने के साथ आपकी सेहत की भी उचित निगरानी रखेगा।

रूटीन चेकअप–

भले ही आप खुद को स्वस्थ महसूस कर रहे हों, तब भी डॉक्टर से अपनी नियमित जांच करवाएं। ऐसा करने से किसी भी सेहत से जुड़ी संभावित समस्या के बारे में आपको समय से पता चल सकता है।

स्क्रीनिंग गाइडलाइन–

स्क्रीनिंग गाइडलाइन प्रारंभिक चरण में ही किड़नी कैंसर के लक्षणों को विकसित होने से पहले उसका पता लगाकर उपचार के परिणामों में सुधार कर सकता है। हालांकि, इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि फिलहाल बिना लक्षणों वाले लोगों में गुर्दे के कैंसर के लिए व्यापक रूप से स्वीकृत नियमित जांच परीक्षण मौजूद नहीं हैं। फिर भी, उच्च जोखिम वाले व्यक्तियों को कुछ जांच के जरिए लाभ हो सकता है।

किन लोगों को होता है किडनी कैंसर का अधिक खतरा–

गुर्दे के कैंसर का जोखिम उन लोगों में सबसे ज्यादा देखने को मिलता है , जिनके परिवार में पहले से ही गुर्दे के कैंसर का कोई इतिहास या फिर कुछ वंशानुगत स्थिति जैसे, वॉन हिप्पेल–लिंडौ (टवद भ्पचचमस–स्पदकंन) रोग रहा हो। ऐसे में रोगी को नियमित जांच की आवश्यकता हो सकती है। बता दें, विशिष्ट स्क्रीनिंग दिशानिर्देश व्यक्ति के जोखिम कारकों और चिकित्सा इतिहास के आधार पर अलग–अलग हो सकते हैं। ऐसे में आपकी स्थिति के आधार पर स्क्रीनिंग करवाने के लिए किसी एक्सपर्ट से परामर्श लें।

इमेजिंग परीक्षण–

अगर किसी रोगी में किडनी कैंसर का संदेह बना हुआ है या उससे जुड़ा कोई लक्षण रोगी महसूस कर रहा है तो किडनी की सेहत और उससे जुड़ी असामान्यताओं का पता लगाने के लिए इमेजिंग परीक्षण जैसे अल्ट्रासाउंड, कंप्यूटेड टोमोग्राफी (सीटी) स्कैन, या एमआरआई करवाया जा सकता है।

सलाह–

गुर्दे के कैंसर से निजात पाने के लिए इसके शुरुआती चरण में इसकी पहचान बेहद जरूरी है। गुर्दे के कैंसर से जुड़ा कोई भी लक्षण महसूस होने पर तुरंत अपने डॉक्टर से सलाह लें।

मानसून में बच्चें ना पड़े बीमार इसलिए ऐसे रखें उनके हाइजीन का ध्यान

मानसून का महीना बैक्टीरिया के पनपने के लिए सबसे अच्छा होता है। चारों तरफ फैली नमी वायरस और बैक्टीरिया के लिए बिल्कुल परफेक्ट माहौल बना देती है। जिसकी वजह से काफी सारे इफेक्शन वाली बीमारियों का खतरा हो जाता है। पानी से फैलने वाली बीमारी तो कभी ठंड और गर्मी से सर्दी–जुकाम होने का डर बना रहता है। खासतौर पर बच्चों के लिए ये मौसम काफी नाजुक होता है। इसलिए उनकी बारिश के मौसम में ठीक से देखभाल करनी चाहिए। पानी में पनपने वाले मच्छर और कीड़े भी डेंगू, मलेरिया फैला देते हैं। ऐसे में जरूरी है अपने बच्चे की सेहत का इस तरह से बचाव करें।

पानी और नमी वाली जगह पर ना जाने दें

अपने बच्चे को ऐसी जगह पर ना जाने दें। जहां नमी हो या फिर पानी रुका हो। ज्यादा पानी वाली जगह बैक्टीरिया का घर हो सकती है। जहां पर मच्छरों के काटने का भी ज्यादा डर होता है। साथ ही ऐसी जगहों पर खुले ड्रेन और मेनहोल होते हैं। जो पानी भरने की वजह से दिखते नही है। इसलिए बच्चों को पानी भरने वाले पार्क और गली में खेलने के लिए बिल्कुल भी ना जाने दें।

बच्चे के फुटवियर का रखें ध्यान

बच्चों के लिए मानसून के मौसम में पहनने के लिए ऐसे शूज दें। जो कि उनके पैरों को अच्छी तरह से ढंककर रखें। और साथ ही उनमे हवा भी पहुंचे। जिससे कि पैरों में होने वाली नमी और पसीना सूखता रहे। बच्चों को ऐसा फुटवियर पहनाएं जो फिसले नहीं और फिसलन वाली जगह पर आराम से वो चल सकें।

मच्छरों से करें बचाव

बारिश के मौसम में जरा सा पानी लगते ही उनमे डेंगू और मलेरिया वाले मच्छर पनपने लगते हैं। इसलिए बच्चों को बच्चों के काटने से बचाएं। मॉस्किटो रेपेलेंट का इस्तेमाल करें। बच्चों के शरीर पर बाहर निकलने पर मॉस्किटो भगाने वाली क्रीम लगाकर रखें। उन्हें फुल बाजुओं वाला कपड़ा पहनाएं और घर में भी जालीदार खिड़की और दलवाजे लगाएं। जिससे कि मच्छरों को घर में घुसने से रोका जा सके।

साफ–सफाई का ध्यान रखें

बारिश के मौसम में बच्चों को साफ–सफाई और हाईजीन का ख्याल रखना सिखाना जरूरी है। बच्चों को हाथ धोना सिखाना, जिससे बच्चों के मुंह में बैक्टीरिया ना जाएं।

संक्षिप्त

रिपोर्ट में दावा- होर्मुज में ट्रैफिक यूएस-ईरान जंग से पहले के स्तर पर, अब हालात कैसे?

नई दिल्ली,एजेंसी। अमेरिका और ईरान के बीच युद्ध समाप्त होने के बाद हॉर्मुज स्ट्रेट में जहाजों की आवाजाही फिर से पटरी पर लौट रही है। शुक्रवार को जारी एक रिपोर्ट के मुताबिक, जहाजों का ट्रैफिक अब युद्ध से पहले के स्तर के 57 प्रतिशत तक पहुंच गया है। जो कि 78 जहाजों के बराबर है। एसएंडपी ग्लोबल की रिपोर्ट में बताया गया है कि ओमान और अंतरराष्ट्रीय समुद्री संगठन ने ओमान के तट के पास एक नया सुरक्षित रास्ता (कॉरिडोर) घोषित किया है। इस फैसले के बाद से जहाजों की संख्या में काफी सुधार देखने को मिला है। दिन भर में हुए कुल ट्रैफिक का 40 प्रतिशत हिस्सा यानी 33 जहाज इसी नए सुरक्षित रास्ते से गुजरे। इनमें से 25 जहाज बाहर की ओर जा रहे थे। खास बात यह है कि आठ जहाज अपनी पहचान छिपाकर यानी श्डार्कश स्थिति में चलते हुए पाए गए। वहीं, कुछ अन्य जहाज ईरान की समुद्री सीमा के करीब से होकर निकले। रिपोर्ट के अनुसार, लड़ाई शुरू होने के बाद खाड़ी के अंदर फंसे हुए जहाज अब बाहर निकल रहे हैं। साथ ही कुछ नए जहाज भी अंदर आ रहे हैं। यह इस बात का संकेत है कि नेविगेशन की आजादी फिर से बहाल हो रही है और हालात धीरे–धीरे सामान्य हो रहे हैं। आवाजाही करने वाले जहाजों में 22 तेल और केमिकल टैंकर, 21 बल्क कैरियर, 12 कार्गो जहाज, सात कंटेनर जहाज, चार एलपीजी टैंकर और दो एलएनजी टैंकर शामिल थे। कुल ट्रैफिक में आने वाले जहाजों की संख्या 37 प्रतिशत रही, जिनमें से 41 प्रतिशत जहाज ईरान से जुड़े थे। 24 जून के आंकड़ों के मुताबिक, 10 कच्चे तेल के टैंकरों ने यहां से सफर किया। इनमें से पांच वीएलसीसी और तीन स्वेजमैक्स जहाज बाहर जा रहे थे, जबकि दो वीएलसीसी खाड़ी के अंदर आए। इसके अलावा 12 प्रोडक्ट टैंकर भी हॉर्मुज स्ट्रेट से गुजरे। इनमें से आधे जहाज अंदर आ रहे थे और आधे बाहर जा रहे थे। ईरान से जुड़ा केवल एक बिटुमेन टैंकर विराज भी इस दौरान देखा गया।

क्या सोने की कीमत 1.20 लाख रुपये तक गिरने वाली है?

नई दिल्ली,एजेंसी। सोने के भाव में लगातार गिरावट आ रही है। ऐसे में बड़ा सवाल है कि सोना और कितना सस्ता होगा? पिछले दो सालों में सोने ने निवेशकों को शानदार रिटर्न दिया। जनवरी 2026 में अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने की कीमत 5,595 डॉलर प्रति औंस के रिकॉर्ड स्तर और भारत में इसकी कीमत करीब 1 लाख 79 हजार रुपये प्रति 10 ग्राम के पीक लेवल पर पहुंच गई थी। हालांकि, पिछले कुछ महीनों से सोने की कीमतों में लगातार गिरावट देखने को मिल रही है, जिससे निवेशकों के बीच यह सवाल उठने लगा है कि क्या सोने में तेजी का दौर अब खत्म हो रहा है। क्या गोल्ड खरीदने का बेस्ट टाइम आ गया है या निवेशकों को अभी इंतजार करना चाहिए? अगर रिपोर्ट की माने तो बीते 10 सालों में जून 2026 तिमाही में गोल्ड की परफॉर्मेंस कमजोर रही। ऑल इंडिया जेम्स एंड ज्वैलरी डोमेस्टिक काउंसिल के चेयरमैन राजेश रोकड़े ने कहा कि अमेरिकी फेडरल कमेटी ने हाल ही में ब्याज दर 3.5 प्रतिशत से 3.75 प्रतिशत के दायरे में बरकरार रखी है। साथ ही फेड अधिकारियों ने इस साल ब्याज दरों में कटौती के संकेत वापस ले लिए हैं और जरूरत पड़ने पर दरें बढ़ाने की संभावना भी जताई है। इसी कारण डॉलर मजबूत हुआ और सोने में मुनाफावसूली तेज हो गई। साथ ही भारत सरकार ने हाल में गोल्ड पर इंपोर्ट ड्यूटी बढ़ाकर 15 फीसदी कर दी है। सभी फैक्टर का असर सोने की कीमतों पर नजर आ रहा है। अगर एक्सपर्ट की माने तो सोने का भाव जल्द 1.20 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम तक आ सकता है। ऑल बुलियन ज्वैलर्स एसोसिएशन के प्रेजिडेंट योगेश सिंघल ने कहा कि जल्द सोने का भाव 1.20 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम तक आ सकता है। अभी तमाम फैक्टर सोने में तेजी लाने जैसे नहीं लग रहे हैं। सिंघल ने कहा कि अगर सोने की हिस्ट्री देखें तो हर पांच से सात साल के साइकिल में सोने के दाम पीक पर आने के बाद बड़ा करेक्शन आता है और इस बार ये करेक्शन 40 फीसदी से भी ज्यादा हो सकता है। सिंघल ने कहा कि ज्वैलरी बाजार से ग्राहक अभी गायब है। अगर सोने का भाव और टूटता है तो आगे खरीदारी अच्छी होगी। राजेश रोकड़े ने कहा कि सोने का भाव इंटरनेशनल मार्केट में 3,850 डॉलर से लेकर 4,030 डॉलर प्रति आउंस की रेन्ज में रह सकता है। भारत में अगर गिरावट जारी रहती है तो दाम 1.35 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम तक आ सकते हैं। हालांकि, ऐसी उम्मीद है कि सोने के भाव में साल के अंत में तेजी आएगी। उन्होंने कहा कि तब सोने का भाव 1.75 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम तक जा सकता है। हालांकि, एक्सपर्ट्स का मानना है कि बुलियन मार्केट में अस्थायी ठहराव है। जनवरी के पीक लेवल से अब तक गोल्ड 24 फीसदी नीचे आ चुका है। सोने की कीमतें 4,000 डॉलर प्रति औंस से नीचे आ गई हैं। इसके बावजूद बाजार में घबराहट में बिकवाली नहीं हो रही है। उनका कहना है कि अमेरिकी फेडरल रिजर्व के सख्त रुख और मजबूत डॉलर ने सोने पर दबाव बनाया है, लेकिन दुनिया के कई सेंट्रल बैंक अब भी लगातार सोने की खरीद कर रहे हैं। ऐसे में मौजूदा गिरावट को लंबे समय की कमजोरी नहीं माना जा सकता। दरअसल, इस गिरावट के पीछे सबसे बड़ा कारण अमेरिका में ब्याज दरों को लेकर बदली उम्मीदें हैं।

जर्मनी को हराकर इतिहास रच गया इक्वाडोर, राष्ट्रपति ने घोषित किया राष्ट्रीय अवकाश, पूरे देश में जश्न

न्यू जर्सी,एजेंसी। फीफा विश्व कप 2026 से एक बेहद चौंकाने वाली और ऐतिहासिक खबर सामने आ रही है। ग्रुप–ई के अपने आखिरी मुकाबले में अंडरडॉग मानी जा रही इक्वाडोर की टीम ने बड़ा उलटफेर करते हुए चार बार की विश्व चौंपियन जर्मनी को 2–1 से धूल चटा दी है। स्थानीय समयानुसार गुरुवार (25 जून) को न्यूयॉर्कध्न्यू जर्सी स्टेडियम में खेले गए इस रोमांचक मैच में जीत दर्ज कर इक्वाडोर ने विश्व कप के नॉकआउट स्टेज में जगह पक्की कर ली है। इस ऐतिहासिक सफलता के बाद इक्वाडोर के राष्ट्रपति डैनियल नोबोआ ने देश में राष्ट्रीय अवकाश की घोषणा कर दी है। इस महाविजय के बाद राष्ट्रपति डैनियल नोबोआ ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक भावुक और गर्व से भरी पोस्ट साझा की। उन्होंने टीम की आलोचना करने वालों को करारा जवाब देते हुए खिलाड़ियों और मुख्य कोच सेबेस्टियन बेकासेसे का आभार जताया। राष्ट्रपति नोबोआ ने लिखा षखिलाड़ियों और कोच को बहुत–बहुत धन्यवाद, जिन्होंने तमाम आलोचनाओं, अपमान और कठिन दौर से गुजरने के बावजूद शानदार वापसी की और पूरे देश को यह असीम खुशी दी। कल (शुक्रवार) देश में छुट्टी रहेगी! इक्वाडोर अमर रहे। इक्वाडोर के लिए यह राह आसान नहीं थी। टीम को अपने पहले मैच में आइवरी कोस्ट से 1–0 से हार का सामना करना पड़ा था, जबकि कुराकाओ के खिलाफ दूसरा मैच गोलरहित ड्रा रहा था। वहीं दूसरी तरफ जर्मनी की टीम पहले ही नॉकआउट के लिए क्वालीफाई कर चुकी थी और मैच में जीत की प्रबल दावेदार थी। मैच की शुरुआत में जर्मनी ने बेहद आक्रामक रुख अपनाया। फ्लोरियन विर्ट्ज के पास पर लेरॉय साने ने मैच का पहला शॉट सीधे गोल पोस्ट के भीतर दागकर जर्मनी को शुरुआती बढ़त दिला दी। साने ने बड़ी ही आसानी से गेंद को इक्वाडोर के गोलकीपर हर्नान गैलिंडेज को छकाते हुए निचले बाएं कोने में डाल दिया। इस गोल के तुरंत बाद इक्वाडोर के खिलाड़ियों ने फाउल की अपील की। रीप्ले में भी यह देखा गया कि गोल से ठीक पहले जर्मनी के अलेक्सांद्र पाव्लोविच का पैर इक्वाडोर के मिडफील्डर प्रेडो विटे के सिर पर लगा था, लेकिन अंपायर ने इसे नजरअंदाज कर दिया।

शुरुआती झटका लगने के बावजूद इक्वाडोर ने हिम्मत नहीं हारी। टीम ने पूरे दमखम और आक्रामकता के साथ वापसी की। मैच के 9वें मिनट में ही निल्सन एंगुलो ने मिडफील्ड से मिले एक ढीले पास को लपका और मैनुअल न्युएर जैसे दिग्गज गोलकीपर को छकाते हुए एक बेहद दमदार लॉन्ग–रेंज शॉट लगाकर स्कोर 1–1 से बराबर कर दिया। इसके बाद पहले हाफ तक दोनों टीमें 1–1 की बराबरी पर रहीं। मैच का सबसे निर्णायक क्षण 77वें मिनट में आया। दाएं छोर से मिले एक कॉर्नर पर केविन रोड्रिगेज ने हवा में उछलकर गेंद को गोल पोस्ट की तरफ फ्लिक किया, जहां खड़े गोंजालो प्लाटा ने बिना कोई गलती किए फुर्ती से गेंद को नेट के अंदर धकेल दिया। इस गोल के होते ही स्टेडियम में मौजूद इक्वाडोर के फैंस और डगआउट में बैठे खिलाड़ी खुशी से झूम उठे। 2–1 की बढ़त लेने के बाद इक्वाडोर की टीम पूरी तरह से डिफेंसिव मोड में आ गई। मैच के अंतिम क्षणों और 7 मिनट के इंजरी टाइम में जर्मनी ने बराबरी का गोल दागने के लिए अपनी पूरी ताकत झोंक दी, लेकिन इक्वाडोर के डिफेंस ने चट्टान की तरह डटकर जर्मनी के हर वार को नाकाम कर दिया। आखिरकार, अंतिम सीटी बजने के साथ ही इक्वाडोर ने 2–1 से मैच अपने नाम कर लिया।

जितेश नहीं, रजत पाटीदार के बाद आरसीबी का अगला कप्तान होगा यह खिलाड़ी ? फ्रेंचाइजी ने दिए संकेत

नई दिल्ली,एजेंसी। आईपीएल 2026 में लगातार दूसरी बार चैंपियन बनी रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने भविष्य की कप्तानी को लेकर बड़ा संकेत दिया है। टीम के क्रिकेट निदेशक मो बॉबट का मानना है कि 25 वर्षीय बल्लेबाज देवदत्त पडिक्कल आने वाले वर्षों में फ्रेंचाइजी की कप्तानी संभाल सकते हैं। हालांकि मौजूदा कप्तान रजत पाटीदार की अगुआई में टीम ने लगातार दो खिताब जीते हैं, लेकिन फ्रेंचाइजी अब भविष्य के नेतृत्व विकल्पों पर भी नजर बनाए हुए है। इसी कड़ी में पडिक्कल का नाम सबसे आगे आता दिखाई दे रहा है। देवदत्त पडिक्कल ने आईपीएल 2026 में नंबर–तीन पर बल्लेबाजी करते हुए शानदार प्रदर्शन किया। उन्होंने 15 पारियों में 464 रन बनाए और उनका स्ट्राइक रेट 168.72 रहा। फिल सॉल्ट और विराट कोहली की तेज शुरुआत के बाद पडिक्कल ने मध्यक्रम में आक्रामक बल्लेबाजी करते हुए टीम को कई अहम जीत दिलाने में भूमिका निभाई। लगातार अच्छे प्रदर्शन की बदौलत उन्होंने टीम प्रबंधन का भरोसा भी जीता। आरसीबी की डॉक्यूमेंट्री आरसीबी ट्रॉफी क्वेस्ट में मो बॉबट ने पडिक्कल की खुलकर तारीफ की। उन्होंने कहा, हम चाहते थे कि वह अपनी बल्लेबाजी में और ज्यादा आक्रामकता दिखाएं और मैच पर प्रभाव डालें। फिल सॉल्ट और विराट कोहली टीम को तेज शुरुआत देते थे और हमारी इच्छा थी कि देवदत्त उस लय को आगे बढ़ाएं। उन्होंने इस जिम्मेदारी को पूरी तरह अपनाया और हमेशा टीम के हित को प्राथमिकता दी। इसके लिए वह पूरे श्रेय के हकदार हैं।श कप्तानी को लेकर बॉबट ने कहा, मैं उनके व्यक्तित्व से भी बेहद प्रभावित हूं। उनमें नेतृत्व करने के सभी गुण हैं। मुझे लगता है कि वह भविष्य में आरसीबी के कप्तान बन सकते हैं। आरसीबी के मेंटर और बल्लेबाजी कोच दिनेश कार्तिक ने भी पडिक्कल को टीम का खास खिलाड़ी बताया। उन्होंने कहा, वह एक शानदार खिलाड़ी हैं। इस टीम में स्थानीय खिलाड़ी होने का गौरव सिर्फ उन्हीं को हासिल है। वह बेंगलुरु का प्रतिनिधित्व करते हैं और इस शहर की पहचान को अपने व्यक्तित्व में समेटे हुए हैं। इतनी कम उम्र में भी वह मैच की परिस्थितियों को बेहतरीन तरीके से समझते और परखते हैं। महज 25 साल की उम्र में देवदत्त पडिक्कल आरसीबी के साथ पांच आईपीएल सीजन खेल चुके हैं। टीम और घरेलू परिस्थितियों की उनकी समझ उन्हें भविष्य के कप्तान के रूप में मजबूत दावेदार बनाती है। फिलहाल रजत पाटीदार टीम की कमान संभाल रहे हैं, लेकिन फ्रेंचाइजी के वरिष्ठ अधिकारियों के हालिया बयान साफ संकेत देते हैं कि पडिक्कल को लंबे समय के नेतृत्व विकल्प के तौर पर तैयार किया जा रहा है। अगर उनका प्रदर्शन इसी तरह जारी रहा, तो आने वाले वर्षों में वह आरसीबी की कप्तानी करते नजर आ सकते हैं।

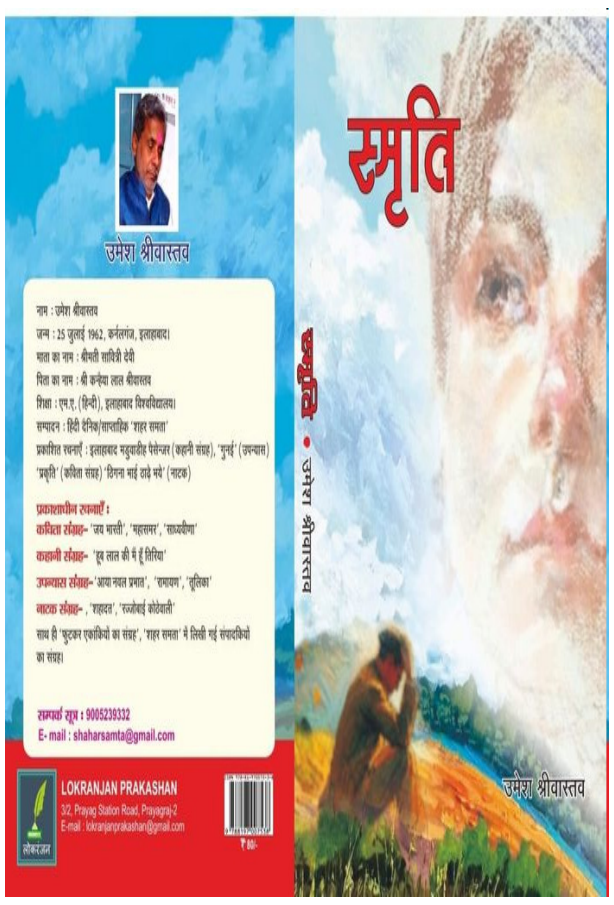

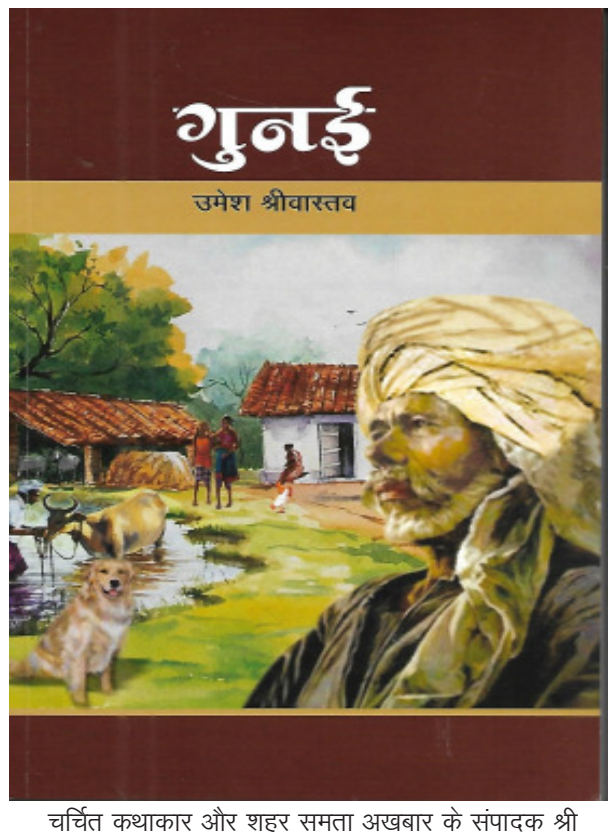

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित

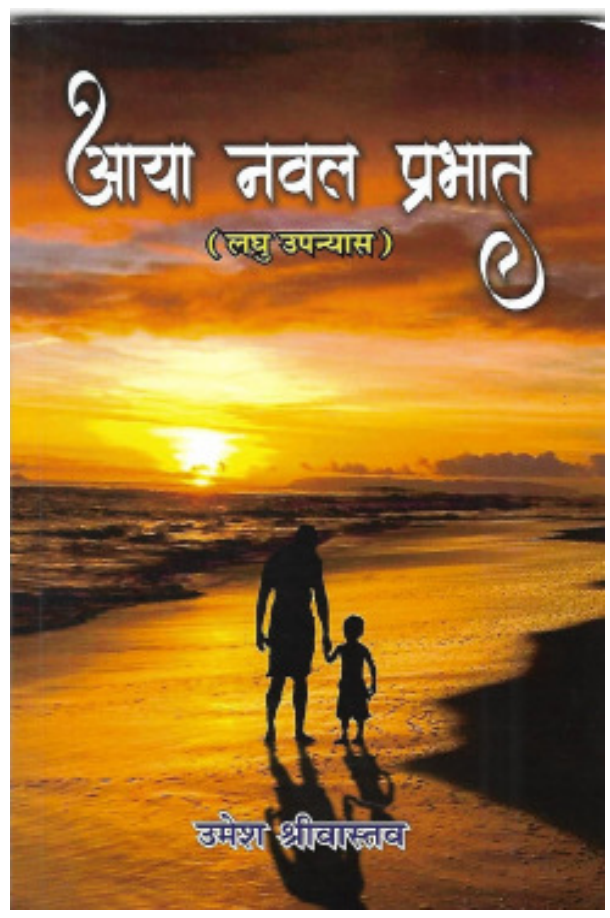

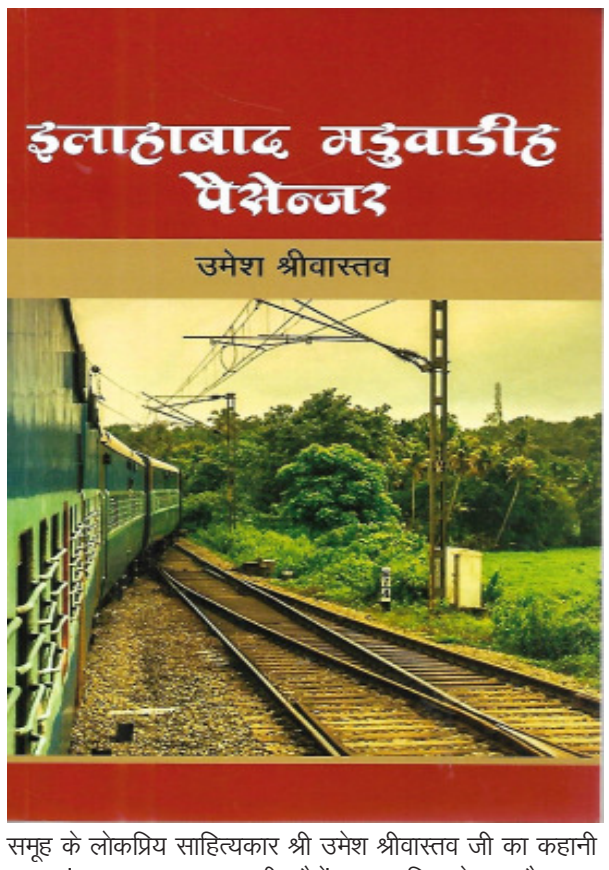

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।

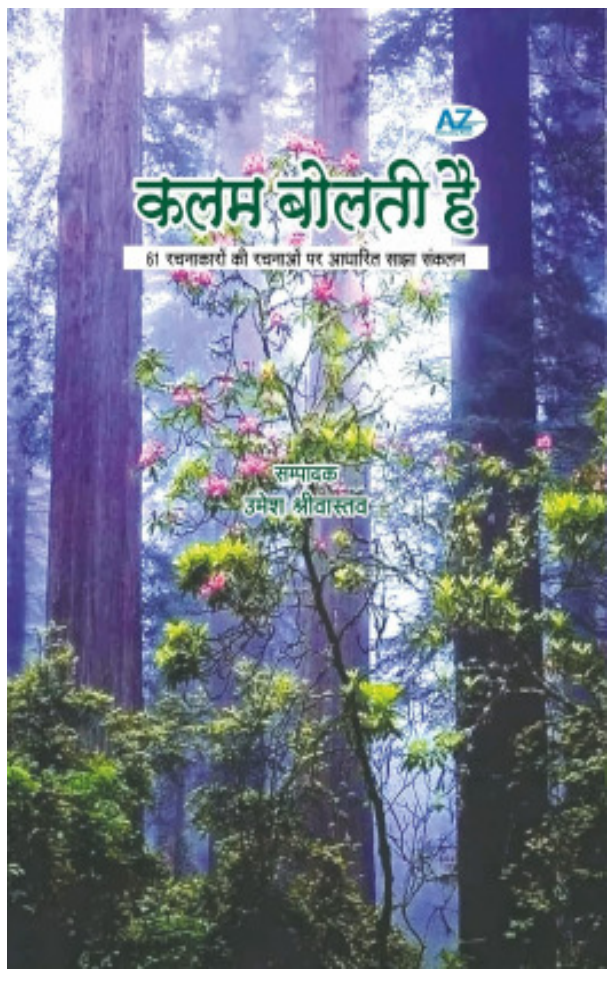

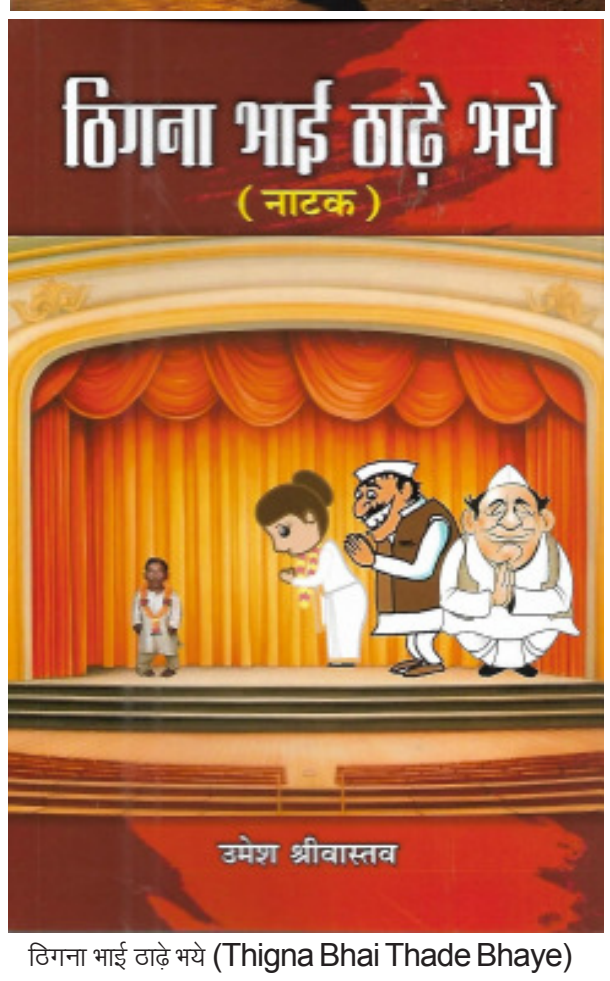

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

संक्षिप्त

'स्कूलों और बच्चों को निशाना बनाने वालों की तय हो जवाबदेही', सुरक्षा परिषद में भारत ने दी सलाह

एजेंसी/संयुक्त राष्ट्र में भारत ने एक बड़ी मांग रखी है। भारत ने कहा कि जो लोग स्कूलों और बच्चों को निशाना बनाते हैं, उनकी जवाबदेही तय होनी चाहिए। भारत ने जोर देकर कहा कि बिना सजा के बच्चों की सुरक्षा का काम अधूरा है। संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि राजदूत हरीश पार्वथनेनी ने

सुरक्षा परिषद में यह बात कही। उन्होंने ≫सशस्त्र संघर्ष से प्रभावित बच्चों की शिक्षा की सुरक्षा≪ विषय पर अपनी बात रखी। राजदूत ने कहा कि शिक्षा एक ऐसा अधिकार है जो युद्ध के समय भी मिलना चाहिए। यह शांति स्थापित करने का सबसे ताकतवर जरिया है। भारत युद्ध के दौरान बच्चों की सुरक्षा और उनके पढ़ने–लिखने के अधिकार के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। भारत चाहता है कि हर बच्चा अपनी पूरी क्षमता को पहचान सके। संयुक्त राष्ट्र महासचिव की 2025 की रिपोर्ट बहुत चिंताजनक है। इस रिपोर्ट के अनुसार, युद्ध वाले इलाकों में बच्चों के खिलाफ हिंसा बहुत ज्यादा बढ़ गई है। साल 2025 में बच्चों के खिलाफ 38,558 गंभीर अपराध दर्ज हुए। इनसे 24,174 बच्चे प्रभावित हुए। इनमें 15,493 लड़के और 7,990 लड़कियां शामिल हैं। करीब 691 बच्चों की पहचान नहीं हो सकी। यह अब तक की सबसे बड़ी संख्या है। कई बच्चों के साथ तो एक से ज्यादा बार गंभीर अपराध हुए। रिपोर्ट में बताया गया कि युद्ध में शामिल गुटों ने अंतरराष्ट्रीय नियमों का पालन नहीं किया। वे बिना किसी डर के अपराध करते रहे। इसका बुरा असर आम लोगों और बच्चों पर पड़ा। रिपोर्ट के मुताबिक, सरकारी सेनाएं भी बच्चों की हत्या और स्कूलों पर हमलों के लिए जिम्मेदार पाई गईं। उन्होंने मानवीय मदद को भी रोकने का काम किया। भारत ने कहा कि बच्चों और सशस्त्र संघर्ष पर सेक्रेटरी–जनरल की 2025 की सालाना रिपोर्ट में चौंकाने वाले आंकड़े सामने आए हैं। इसमें बताया गया है कि एक ही साल में स्कूलों पर हमलों में 44 प्रतिशत की भारी बढ़ोतरी हुई है। दुनिया में हर छह में से एक बच्चा यानी करीब 47.3 करोड़ बच्चे युद्ध वाले इलाकों में रहते हैं। इनमें से 8.5 करोड़ से ज्यादा बच्चों के पास शिक्षा की कोई सुविधा नहीं है। भारत ने इसे पूरी मानवता की विफलता बताया है। राजदूत ने कहा कि बच्चों की शिक्षा बचाना असल में किसी देश का भविष्य बचाना है। इसकी प्राथमिक जिम्मेदारी सरकारों की है। भारत में 14 साल तक के बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार मिला हुआ है। भारत ने ≫दीक्षा (क्ष्ढ्ढ·) नाम का एक डिजिटल प्लेटफॉर्म भी बनाया है। यह तकनीक और एआई (।) की मदद से कई भाषाओं में बच्चों को अच्छी शिक्षा दे रहा है। भारत का अनुभव कहता है कि डिजिटल पढ़ाई युद्ध के समय बच्चों के लिए एक पुल का काम कर सकती है। भारत ने अपने पड़ोसी देशों में शरणार्थियों की शिक्षा के लिए काफी निवेश किया है। भारत का मानना है कि पढ़ाई जारी रखना ही मुश्किलों से उबरने का सबसे अच्छा तरीका है। भारत दूसरे देशों में स्कूल और ट्रेनिंग सेंटर बनाने में भी मदद कर रहा है।

होर्मुज में फिर तनाव: यूएन रूट पर चल रहा था मालवाहक जहाज, मिसाइल जैसे प्रोजेक्टाइल से हुआ हमला

तेहरान, एजेंसी। होर्मुज जलडम/मध्य से एक बड़ी खबर आ रही है। यहां संयुक्त राष्ट्र के सुरक्षित समुद्री मार्ग पर एक मालवाहक जहाज को निशाना बनाया गया है। ब्रिटिश सेना ने बताया कि गुरुवार को इस कमर्शियल शिप पर एक अज्ञात प्रोजेक्टाइल से हमला हुआ। इस हमले के बाद पूरे इलाके में तनाव बढ़ गया है। हालांकि, राहत की बात यह है कि घटना

में कोई भी हताहत नहीं हुआ है। सुरक्षित रूट पर अचानक हमला ब्रिटिश सेना की सुरक्षा एजेंसी यूकेएमटीओ ने इस हमले की पुष्टि की है। रिपोर्ट के मुताबिक, यह मालवाहक जहाज संयुक्त राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय समुद्री संगठन द्वारा स्वीकृत विशेष रूट से गुजर रहा था। तभी एक अज्ञात प्रोजेक्टाइल सीधे आकर जहाज से टकराया। इस रूट को इसलिए बनाया गया था ताकि खाड़ी क्षेत्र में फंसे जहाजों को सुरक्षित निकाला जा सके। इस सुरक्षित गलियारे पर हमला होने से अंतरराष्ट्रीय एजेंसियां सतर्क हो गई हैं। कोई हताहत नहीं, जहाज सुरक्षित शुरुआती सुरक्षा रिपोर्टों के अनुसार, इस अचानक हुए हमले में जहाज को नुकसान पहुंचा है। लेकिन चालक दल का कोई भी सदस्य घायल नहीं हुआ है। शिप के कैप्टन ने भी पुष्टि की है कि सभी लोग पूरी तरह सुरक्षित हैं। समुद्र में किसी भी तरह के तेल रिसाव या पर्यावरणीय नुकसान की खबर नहीं है।

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज जिले से प्रकाशित समाचार पत्र को समस्त जनपदों में एवम तहसील व ब्लॉक/शहर में ब्यूरो प्रमुख, चीफ रिपोर्टर, संवाददाता, प्रतिनिधि मण्डल की अवश्यकता है जिन्हे आकर्षण वेतन और भत्ते आदि सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

सम्पर्क सूत्र
शहर समता हिन्दी दैनिक/साप्ताहिक समाचार पत्र
मोबाईल नम्बर 9190052 39332
919450482227

मलबों में भी चल रही सांसें, जिंदा पशु-इंसान किसी चमत्कार से कम नहीं, विचलित कर रही तबाही

काराकास, एजेंसी। वेनेजुएला में आए दो विनाशकारी भूकंपों ने भारी तबाही मचाई है। बुधवार को एक मिनट के भीतर 7.2 और 7.5 तीव्रता के दो शक्तिशाली भूकंप आए। इस आपदा में अब तक कम से कम 235 लोगों की जान जा चुकी है और 4,300 से ज्यादा लोग घायल हैं। हजारों लोग अब भी लापता बताए जा रहे हैं। भूकंप से मची तबाही के बीच, कुछ ऐसी चमत्कारिक तस्वीरें भी सामने आई हैं जिसने सबको हैरान कर दिया। बचाव कार्य मुख्य रूप से देश के उत्तरी इलाकों में चल रहा है। यह इलाक सबसे ज्यादा प्रभावित है। ला गुआरा क्षेत्र में हालात सबसे ज्यादा खराब हैं। यहां स्वयंसेवक और आपातकालीन टीमें कंक्रीट के पहाड़ों को खोदकर जिंदगियां तलाश रही हैं। इसी राहत बचाव कार्य के दौरान एक मासूम बच्चे का रेस्क्यू किया गया। मलबे के नीचे दबा यह बच्चा पूरी तरह सुरक्षित मिला। सोशल मीडिया पर आए वीडियो में बचाव

कर्मी बच्चे को सुरक्षित निकालते समय खुशी से रोते और चिल्लाते दिखे। यह बच्चा उन परिवारों के लिए उम्मीद की किरण बन गया है जिनके अपने अब भी लापता हैं। ला गुआरा में ही वेनेजुएला की नेशनल पुलिस और अन्य सुरक्षा एजेंसियों ने मिलकर एक और नवजात को सुरक्षित निकाला। इसके अलावा, घंटों की कड़ी मेहनत के बाद 12 साल के एक लड़के को भी मलबे से जिंदा बाहर निकाला गया। इन सफलताओं ने बचाव दलों का उत्साह बढ़ा दिया है। एक महिला को भी मलबे से जिंदा निकाला गया है। ऐसी ही एक दिल छू लेने वाली घटना तब सामने आई, जब घंटों की भारी मशक्कत के बाद मलबे के एक संकरे हिस्से से एक बेजुबान कुत्ते को सुरक्षित बाहर निकाला गया। कई घंटों तक बिना हवा, पानी और रोशनी के मलबे के नीचे दबे रहने के कारण वह पूरी तरह सहमा हुआ था और बुरी तरह हांफ रहा था। जैसे ही रेस्क्यू टीम ने उसे बाहर निकाला, एक राहतकर्मी ने तुरंत अपनी बोतल से उसे पानी पिलाया। मलबे से निकलते ही बेजुबान का तड़पकर पानी पीने का यह वीडियो अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। इस वीडियो को देखकर लाखों लोगों की आंखें नम हैं। भूकंप के दौरान माईकेटिया

अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर खड़े रुटाका एयरलाइंस के विमान में भी अफरा–तफरी मच गई। विमान के अंदर मौजूद यात्रियों और चालक दल ने तेज झटके महसूस किए। नुकसान की वजह से हवाई अड्डे को बंद कर दिया गया है, जिससे राहत कार्यों में दिक्कत आ रही है। तबाही के बीच एक मां और बच्चे के मिलन की कहानी ने भी सबका दिल जीत लिया। एक महिला राहत केंद्र की ओर जा रही थी, तभी रास्ते में उसे अपना खोया हुआ बच्चा मिल गया। कार्यवाहक राष्ट्रपति डेल्सी रॉड्रिग्ज ने कहा है कि प्रशासन ज्यादा से ज्यादा लोगों को बचाने की कोशिश कर रहा है। अधिकारियों ने भारी मशीनों की मांग की है ताकि मलबे को तेजी से हटाया जा सके। यह भूकंप वेनेजुएला में पिछले 100 वर्षों में आए सबसे शक्तिशाली भूकंपों में से एक है। इसने अस्पतालों, बिजली और संचार व्यवस्था को ठप कर दिया है। लगभग 250 इमारतें पूरी तरह नष्ट हो गई हैं। करीब 200 लोग अब भी मलबे में दबे हो सकते हैं। कई देशों से अंतरराष्ट्रीय टीमें और मदद पहुंचनी शुरू हो गई है।

क्रीमिया पर यूक्रेन का भीषण ड्रोन हमला, रूसी सेना ने गिराए 660 ड्रोन, बढ़ेगा टकराव?

मॉस्को/कीव, एजेंसी। चार साल से अधिक समय से जारी रूस और यूक्रेन की जंग थमने का नाम नहीं ले रही है। फरवरी, 2022 में शुरू हुआ दोनों देशों का संघर्ष अब तक जारी है। ताजा घटनाक्रम में रूस ने आरोप लगाया है कि यूक्रेन की तरफ से भीषण हमला किया गया है जो अब तक की लड़ाई में सबसे बड़े हमलों में एक है। समाचार एजेंसी पीटीआई पर अंतरराष्ट्रीय एजेंसी– एपी के हवाले से आई रिपोर्ट के मुताबिक, रूस ने अपनी जमीन और कब्जे वाले क्रीमिया पर हमला किए जाने का आरोप लगाया है। क्या यूक्रेनी ने ड्रोन के सबसे बड़े हमले को अंजाम दिया? रूस के रक्षा मंत्रालय ने शुक्रवार को जानकारी दी कि उनकी वायु सेना ने यूक्रेन के 660 ड्रोनों को मार गिराया है। यह हमला रूस के 12 अलग–अलग इलाकों के साथ–साथ क्रीमिया प्रायद्वीप, काला सागर और आजोव सागर में किया गया। इस ड्रोन हमले के बाद दोनों देशों का टकराव

बढ़ने की आशंका है। यूक्रेन पिछले कई महीनों से रूस के तेल उत्पादन और ऊर्जा केंद्रों को निशाना बना रहा है। पश्चिमी अधिकारियों और जानकारों का मानना है कि इस रणनीति से रूस की ईंधन सप्लाई और सैन्य रसद में कमी आई है। इससे युद्ध के मैदान में रूस की कोशिशें धीमी पड़ गई हैं और राष्ट्रपति पुतिन पर दबाव बढ़ गया है। यह बड़ा हमला यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोडिमिर जेलेंस्की के उस बयान के कुछ घंटों बाद हुआ, जिसमें उन्होंने ≫40 दिनों के प्रभाव अभियान≪ का आदेश दिया था। माना जा रहा है कि इसका मकसद हमलों को तेज करके रूस को युद्ध खत्म करने के लिए मजबूर करना है। जेलेंस्की ने यह कदम तब उठाया जब पिछले एक साल से अमेरिका की शांति कोशिशों का कोई ठोस नतीजा नहीं निकला। हमले में कितना नुकसान हुआ नुकसान की बात करें तो मॉस्को के दक्षिण में स्थित तुला क्षेत्र में एक घर को नुकसान पहुंचा और एक महिला घायल हो गई। तुला के गवर्नर दिमित्री मिल्याएव ने बताया कि नोवोमोस्कोव्स्क शहर में एक बिजली लाइन और एक औद्योगिक केंद्र को नुकसान पहुंचा है। कुछ स्वतंत्र मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक वहां एक केमिकल प्लांट और हाइड्रोइलेक्ट्रिक प्लांट में आग लग गई, हालांकि इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। राजधानी मॉस्को के मेयर सर्गेई सोब्यानिन ने बताया कि शहर की ओर बढ़ रहे 47 ड्रोनों को मार गिराया गया। वहां किसी के हताहत होने या नुकसान की खबर नहीं मिली है। रूस ने भी यूक्रेन पर हमला किया दूसरी ओर, रूस ने भी यूक्रेन के खार्किव क्षेत्र पर हमले किए। खार्किव के क्षेत्रीय प्रमुख ओलेह सिनीहुबोव ने बताया कि पिछले 24 घंटों में रूसी हमलों में दो नागरिकों की मौत हो गई और सात लोग घायल हुए। रूस ने खार्किव और आसपास के 16 इलाकों पर गाइडेड बमों और ड्रोनों से हमला किया। यूक्रेन की वायु सेना ने बताया कि उन्होंने रूस के 189 ड्रोनों में से 174 को रोक दिया, लेकिन सात में से चार इस्कंदर–एम बैलिस्टिक मिसाइलें अपने लक्ष्य पर गिरने में सफल रहीं।

अमेरिका: युद्ध रोकने संबंधी प्रस्ताव के पक्ष में वोट पर अपनों से ही खफा ट्रंप, सीनेटर को कहा 'सनकी'

वाशिंगटन, एजेंसी। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सीनेट (उच्च सदन) में रिपब्लिकन सांसदों को ईरान युद्ध को रोकने संबंधी प्रस्ताव के पक्ष में वोट को लेकर खरीखोटी सुनाई। फ्लोरिडा के सीनेटर रिक स्कॉट के निमंत्रण पर ट्रंप अमेरिकी संसद भवन में रिपब्लिकन सांसदों के लंच में शामिल हुए। बैठक के बाद सीनेट में सीनेटर कैसिनी के समर्थन से नया प्रस्ताव पास हुआ और पुराना गिर गया। ट्रंप ने कहा, वह नागरिकता संबंधी बिल के लिए भी सांसदों पर दबाव बनाएंगे। हालांकि, पूरी बातचीत युद्ध शक्तियों संबंधी प्रस्ताव (वॉर पावर्स रेजोल्यूशन) पर ही केंद्रित रही। ट्रंप ने खासतौर पर उन चार रिपब्लिकन सांसदों को निशाने पर लिया, जिन्होंने इस

प्रस्ताव पर डेमोक्रेट सांसदों का साथ दिया था। इनमें अलास्का से लिसा मुर्कोव्स्की, मेन से सुसान कॉलिन्स, केंटकी से रैंड पॉल और लुइसियाना से बिल कैसिडी शामिल हैं। ट्रंप ने इससे पहले सोशल मीडिया पर इन्हें नाकारा कहा। रिपब्लिकनों की चुप्पी के बीच कैसिडी ने अपने मतदान का बचाव किया। कैसिडी गत माह प्रतिद्वंद्वी को ट्रंप के समर्थन के चलते अपनी पार्टी की प्राथमिक चुनावी प्रतिस्पर्धा हार गए थे। बैठक के बाद कैसिडी ने कहा–मैंने खड़े होकर ट्रंप से कहा, आपने अमेरिकी जनता को यह नहीं बताया है कि वास्तव में क्या हो रहा है। यह ईरान युद्ध अभियान 4 सप्ताह चलने वाला था, लेकिन अब 4 माह से जारी है। मैंने उन्हें उनकी भाषा में जवाब दिया। ट्रंप ने सीनेटर को सनकी कहा कैसिडी ने कहा, जब तक मुझे पूरी जानकारी नहीं दी जाती, मैं युद्ध प्रस्ताव को समर्थन देता रहूंगा। ट्रंप ने कई बार कैसिडी से बैठने को कहा। लेकिन तीखी बहस के बीच एक मौके पर उन्होंने सीनेटर को 'सनकी' तक कह दिया। ईरान, इबोला के लिए मांगे 87.6 अरब डॉलर व्हाइट हाउस ने कांग्रेस (अमेरिकी संसद) से 87.6 अरब डॉलर अतिरिक्त धनराशि मांगी है। इसका अधिकांश हिस्सा ईरान के खिलाफ युद्ध के बाद पेंटागन की सैन्य क्षमताओं और संसाधनों की भरपाई पर खर्च किया जाएगा। अधिकांश सांसद किसी भी नए सैन्य अभियान या अतिरिक्त सैन्य कार्रवाई के विरोध में हैं। बजट का कुछ हिस्सा इबोला व अन्य मदों पर खर्च होगा।

ताइवान पर ट्रंप प्रशासन का बयान: अमेरिका अपनी नीति नहीं बदलेगा, 14 अरब डॉलर के हथियार पैकेज की समीक्षा जारी

वाशिंगटन, एजेंसी। ट्रंप सरकार ने एक बार फिर साफ किया कि ताइवान को लेकर उसकी लंबे समय से चली आ रही नीति में कोई बदलाव नहीं हुआ है। हालांकि, चीन की बढ़ती सैन्य गतिविधियों और दबाव के बीच स्वशासित द्वीप ताइवान के लिए प्रस्तावित 14 अरब डॉलर के हथियार पैकेज की समीक्षा की जा रही है। एकतरफा बदलाव का विरोध करते हैं पूर्वी एशिया और प्रशांत

मामलों के लिए अमेरिकी विदेश मंत्रालय के सहायक विदेश मंत्री माइकल जी. डीसोम्ब्रे ने प्रतिनिधि सभा (हाउस) की विदेश मामलों की उपसमिति (पूर्वी एशिया और प्रशांत) के समक्ष पेश होते हुए लॉमेकर्स से कहा कि ट्रंप प्रशासन ताइवान संबंध अधिनियम और अमेरिका–ताइवान संबंधों को संचालित करने वाले लंबे समय से चले आ रहे नीति–ढांचे के प्रति पूरी तरह प्रतिबद्ध है। डीसोम्ब्रे ने कहा, ≫ताइवान पर हमारी पुरानी नीति नहीं बदली है, जो ताइवान संबंध अधिनियम, तीन ज्वॉइंट कम्युनिकेशंस और छह एश्योरेंस से निर्देशित होती है। हम ताइवान स्ट्रेट में शांति और स्थिरता बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं और स्टेटस में किसी भी एकतरफा बदलाव का विरोध करते हैं। ताइवान के साथ मजबूती से खड़े हैं सुनवाई के दौरान ज्यादातर ताइवान का मुद्दा छाया रहा, जिसमें डेमोक्रेटिक और रिपब्लिकन लॉमेकर्स ने सैन्य मदद, रोकथाम और द्वीप पर चीन के बढ़ते दबाव के लिए सरकार पर दबाव डाला। सुनवाई की अध्यक्षता करने वाले प्रतिनिधि यंग किम ने कहा कि ट्रंप सरकार और कांग्रेस सीसीपी की रोजाना की धमकियों और जबरदस्ती के खिलाफ ताइवान के साथ मजबूती से खड़े हैं। उन्होंने ताइवान के लिए 11 बिलियन डॉलर के हथियार पैकेज को एडमिनिस्ट्रेशन की मंजूरी का स्वागत किया। इसके साथ ही कहा कि विदेश सचिव मार्को रुबियो ने लॉमेकर्स को बताया था कि 14 बिलियन डॉलर का फॉलो–ऑन पैकेज की अभी समीक्षा हो रही है। जब भी हम चीन से मिलते हैं.... रिप्रेजेंटेटिव जॉन ≫जॉनी≪ ओल्ज़ेव्स्की जूनियर ने सवाल किया कि क्या राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की हाल की बातें, जिसमें उन्होंने चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के साथ ताइवान को हथियार बेचने पर चर्चा करने के बारे में कहा था। ताइवान के लिए वाशिंगटन के लंबे समय से चले आ रहे कमिटमेंट्स के मुताबिक थीं। जवाब में, डीसोम्ब्रे ने कहा कि ताइवान में हथियारों की बिक्री का मुद्दा बीजिंग अक्सर द्विपक्षीय मीटिंग के दौरान उठाता था। उन्होंने कहा, ≫जब भी हम चीन से मिलते हैं, तो वे ताइवान और ताइवान में हथियारों की बिक्री के सवाल उठाते हैं। यह हमारी उनके साथ होने वाली लगभग हर बातचीत का हिस्सा होता है। यह किसी भी तरह से छह वादों से अलग नहीं है। जब बार–बार पूछा गया कि सरकार 14 बिलियन डॉलर के प्रस्तावित पैकेज के बारे में कांग्रेस को कब बताएगा, तो डीसोम्ब्रे ने सिर्फ इतना कहा कि राष्ट्रपति इसकी समीक्षा कर रहे हैं और वही यह फैसला लेंगे। रिपब्लिकन प्रतिनिधि एंडी बार ने ताइवान को लेकर सरकार के रिकॉर्ड का बचाव करते हुए कहा कि पहले से मंजूर 11 बिलियन डॉलर का पैकेज आइलैंड की रक्षा के लिए पहले कभी नहीं देखा गया कमिटमेंट दिखाता है। बार ने कहा कि पैकेज में एचआईएमएआरएस रॉकेट सिस्टम, एटीएसीएमएस मिसाइल, हॉवित्जर और ड्रोन शामिल थे। उन्होंने कहा कि ऐसी कोई सरकार नहीं रही जिसने ताइवान के लिए उतनी प्रतिबद्धता दिखाई हो जितना मौजूदा सरकार ने दिखाया है। उन्होंने कांग्रेस से यह भी अपील की कि वह अमेरिकी रक्षा औद्योगिक बेस को मजबूत करके ताइवान को पहले से अप्रूव्ड 32 बिलियन डॉलर से ज्यादा के सैन्य उपकरण देने में हो रही देरी को दूर करने में मदद करे। डीसोम्ब्रे इस बात से सहमत थे कि विदेशी मिलिट्री बिक्री में तेजी लाने के लिए मैन्युफैक्चरिंग क्षमता बढ़ाना और अमेरिकी रक्षा उद्योग में निवेश को आसान बनाना जरूरी है। ताइवान से रक्षा बजट में बढ़ोतरी करने का आग्रह किया यंग किम ने ताइवान से अपना रक्षा बजट में और बढ़ोतरी करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि हालांकि ताइवान की संसद ने 25 अरब डॉलर के रक्षा पैकेज को मंजूरी दे दी है, लेकिन ड्रोन जैसी महत्वपूर्ण सैन्य क्षमताओं के विकास और खरीद के लिए अभी पर्याप्त धन आवंटित नहीं किया गया है। डीसोम्ब्रे ने कहा कि अमेरिका ताइवान को और हथियार खरीदने के लिए अतिरिक्त बजटरी मदद को मंजूरी देने के लिए बढ़ावा दे रहा है। ताइवान रिलेशंस एक्ट के तहत, अमेरिका ताइवान को बचाव के लिए हथियार देता है। वहीं, चीनी हमले की हालत में वह सैन्य दखल देगा या नहीं, इस पर ≫रणनीतिक अस्पष्टता≪ की नीति बनाए रखता है। बीजिंग ताइवान को अपने इलाके का हिस्सा मानता है।

लोगों को भूखा रख-नौकरियां छीन विद्रोह को दबाने में जुटी शहबाज सरकार

एजेंसी/पाकिस्तान के अवैध कब्जे वाले कश्मीर में इस्लामाबाद के खिलाफ जन विद्रोह अपने चरम पर पहुंच गया है। अवामी एक्शन कमेटी की अगुवाई में जारी व्यापक प्रदर्शन लगातार 17वें दिन भी जारी रहा। जनता का आरोप है कि आंदोलन को दबाने के लिए शहबाज सरकार के निर्देश पर प्रशासन अब लोगों को भूखा रखने व नौकरियां छीनने के अमानवीय हथकंडे अपना रहा है।

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।